A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 10 मई, 2026

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 217, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

यह निशान बहुत कुछ कहता है–

इसका एक अर्थ है कि यह पेड़ विकास की भेंट चढ़ने वाला है। दूसरा अर्थ है, इस पेड़ के महत्व को समझो ताकि जीवन बचा रहे। यह आप पर है कि आप किस अर्थ को महत्व देते हैं।
फोटो: बंसीलाल परमार

सुप्रभात

माँ

तुम्हारे ऋण का भार
बहुत अधिक है
सहस्त्रों जन्म लेकर भी
संभव नहीं उतार पाना।

तुम्हारे गर्भ में मेरी यात्रा
सभी महाकल्पों से अधिक है
तुम्हारी प्रसव पीड़ा
सप्त सागरों के आयतन से भारी है
और तुम्हारी ममता में
ब्रह्माण्ड के सभी पिंडों से अधिक
गुरुत्व है।

मेरे रक्त की हर बूंद
तुम्हारे क्षीर-अमृत की ऋणी है
मेरा जीवन चरित्र
तुम्हारे पुण्य संस्कारों का प्रतिफल है।

जब तक सृष्टि में जीवन है
देव, दानव, यक्ष और मैं साधारण
मनुष्य
सभी तुम्हारे ऋणी रहेंगे
किसी में भी सामर्थ्य नहीं है
तुम्हारे ऋण से मुक्त हो जाने की।

– डॉ. जीवन एस. रजक

शुभेंदु ने ली शपथ, बने बंगाल में भाजपा के पहले सीएम

● दिलीप घोष समेत 5 मंत्री बने, गवर्नर रवि ने दिलाई शपथ

प्रधानमंत्री मोदी का घुटनों के बल बैठकर जनता को प्रणाम

कोलकाता (एजेंसी)। सुवेंदु अधिकारी शनिवार को पश्चिम बंगाल में बीजेपी के पहले मुख्यमंत्री बन गए हैं। सुवेंदु ने बांग्ला में ईश्वर के नाम की शपथ ली। शपथ के बाद सुवेंदु, पीएम के पास गए और उन्हें झुककर प्रणाम किया। बंगाल के गवर्नर आरएन रवि ने सुवेंदु के अलावा 5 और विधायकों को मंत्री पद की शपथ दिलाई। इनमें दिलीप घोष, अग्निमित्रा पॉल, अशोक कीर्तनिया, क्षुदीराम टूडू और निषिथ प्रमाणिक शामिल रहे।

शपथ में पीएम मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, एनडीए और बीजेपी शासित राज्यों के 20 मुख्यमंत्री मौजूद रहे। कार्यक्रम में सबसे पहले मोदी ने मंच पर रवींद्रनाथ टैगोर को उनकी जयंती पर श्रद्धाजंलि दी। इस दौरान पीएम ने भाजपा के 98 साल के कार्यकर्ता माखनलाल सरकार का सम्मान किया। मंच पर आते ही प्रधानमंत्री सीधे सरकार के पास गए, उन्हें शॉल ओढ़ाया और फिर उनके पैर छुए।

योगी ने शुभेंदु को भगवा गमछा ओढ़ाया

सुवेंदु अधिकारी ने शपथ लेने के बाद मंच पर मौजूद सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों का अभिवादन किया। इस दौरान यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ ने उन्हें गेरुआ गमछा ओढ़ाया। पहली बार विधायक बने क्षुदीराम टुडू आदिवासी पोशाक में शपथ लेने पहुंचे। उन्होंने गले में बीजेपी का गमछा और सिर पर पीला गमछा बांध रखा था। पेशे से शिक्षक रहे क्षुदीराम रानीबांध सीट से पहली बार विधायक बने हैं। पीएम मोदी ने परेड ग्राउंड में रोड शो किया। वे ग्राउंड की एंट्री से मंच तक एक खास रूप से बनाए गए रथ में गए। इस दौरान भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष समिक और सुवेंदु अधिकारी भी मौजूद थे। उस वक्त ग्राउंड पर करीब 1 लाख लोग मौजूद थे। पीएम मोदी मारे गए भाजपा कार्यकर्ताओं के परिजनों से मिले।

पीएम मोदी ने 98 साल के कार्यकर्ता के पैर छुए

शपथ ग्रहण से पहले मंच पर पीएम मोदी ने पश्चिम बंगाल बीजेपी के सबसे बुजुर्ग कार्यकर्ताओं में से एक माखनलाल सरकार के पैर छुए। 98 साल के माखनलाल सरकार 1952 में श्यामा प्रसाद मुखर्जी के साथ कश्मीर में तिरंगा फहराने गए थे, जहां आंदोलन के दौरान उन्हें गिरफ्तार किया गया था। शपथ समारोह के आखिर में पीएम मोदी ने मंच से परेड ग्राउंड में मौजूद लोगों को धन्यवाद किया। इस दौरान वे घुटनों के बल बैठे और जनता को प्रणाम किया। सुवेंदु अधिकारी ने बांग्ला में ईश्वर के नाम पर शपथ ली। शपथ के बाद वे पीएम मोदी के पास गए और झुककर प्रणाम किया। पीएम मोदी ने उनकी पीठ थपथपाकर शुभकामनाएं दीं।

बंगाल में सुशासन का 'नवयुग' सीएम डॉ. यादव ने दी शुभेंदु को बधाई

भोपाल (नप्र)। पश्चिम बंगाल के राजनीतिक इतिहास में 9 मई 2026 की तारीख एक बड़े बदलाव के गवाह के रूप में दर्ज हो गई है। कोलकाता के ऐतिहासिक ब्रिगेड परेड ग्राउंड में शुभेंदु अधिकारी ने पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। वे राज्य में भारतीय जनता पार्टी के पहले मुख्यमंत्री बन गए हैं। इस भव्य समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन सहित एनडीए (एनडीए) के तमाम दिग्गज नेता शामिल हुए।

पीएम मोदी का भावुक संदेश– शपथ ग्रहण के फौरन बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस दिन को बंगाल के लिए भाग्य का निर्णायक मोड़ करार दिया। पीएम ने सोशल मीडिया पर लिखा कि यह तिथि हमेशा स्मरणीय रहेगी, क्योंकि इसने आशा, सम्मान और सुशासन के

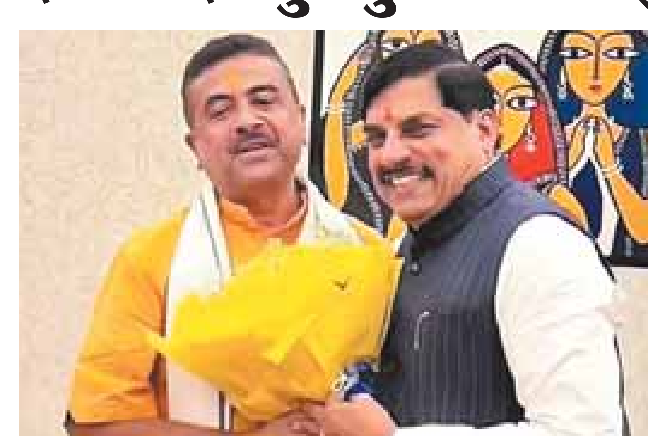

एक नए अध्याय की शुरुआत की है। ब्रिगेड परेड ग्राउंड की भीड़ इस बात की तस्दीक कर रही थी कि बंगाल की जनता अब नई राजनीति की उम्मीद कर रही है। प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन और शुभेंदु अधिकारी के नेतृत्व में पश्चिम बंगाल विकास के नए कीर्तिमान रचेगा। यह ऐतिहासिक परिवर्तन बंगाल की जागरूक जनता की जीत है। इस ऐतिहासिक मौके पर मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी अपनी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि बंगाल में आज से सुशासन और सुरक्षा के नवयुग का शुभारंभ हुआ है।

विजय की रील सफलता क्या रियल में बदलेगी!

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

तमिलनाडु की धरती पर राजनीति और सिनेमा का संबंध केवल व्यावसायिक नहीं, बल्कि भावनात्मक और ऐतिहासिक रहा है। यहाँ के मतदाताओं ने हमेशा परदे के नायकों में अपना मसीहा तलाशा है। हाल ही में तमिल सुपरस्टार विजय थलापति द्वारा 'तमिलगा वेत्री कड़गम' से राजनीति में प्रवेश ने इस चर्चा को फिर से जीवित कर दिया। सीएन अन्नादुरई से शुरू हुई यह परंपरा एमजीआर और जयललिता के दौर से होती हुई अब विजय के कंधों पर टिकी है। लेकिन, क्या विजय थलापति अपनी फिल्मी छवि और प्रशंसकों की फौज को एक ठोस राजनीतिक आधार में बदल पाएंगे!

तमिलनाडु में राजनीति और सिनेमा के मिलन की नींव सीएन अन्नादुरई और एम करुणानिधि ने रखी थी। उन्होंने अपनी फिल्मों की पटकथाओं और संवादों के माध्यम से द्रविड़ विचारधारा को घर-घर पहुँचाया। यह वह दौर था जब सिनेमा केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक सुधार और राजनीतिक संदेश का सबसे सशक्त माध्यम बन गया था। इसके बाद एमजीआर (एमजी रामचंद्रन) ने इस परंपरा को एक नई ऊँचाई दी। एमजीआर ने अपनी फिल्मों में हमेशा एक ऐसे नायक की भूमिका निभाई, जो गरीबों का रक्षक, महिलाओं का सम्मान करने वाला और अन्याय के खिलाफ लड़ने वाला था। उनकी रील लाइफ की छवि इतनी प्रभावी थी कि जनता ने उन्हें 'मक्कल थिलागम' (जनता का लाडला) मान लिया। जयललिता ने भी इसी विरासत को आगे बढ़ाया। तमिल मतदाताओं के मानस पर इन सितारों का प्रभाव इतना गहरा था कि वे परदे के संघर्ष को वास्तविक मानने लगे और अपने पसंदीदा नायक को सत्ता की कुर्सी तक पहुँचा दिया।

विजय थलापति इसी परंपरा की अगली और महत्वपूर्ण कड़ी हैं। विजय की फिल्मों का सफर अगर पिछले एक दशक में देखें, तो कत्थी, मेर्सल, सरकार और 'बीस्ट' जैसी फिल्मों ने उन्हें केवल एक अभिनेता नहीं, बल्कि एक व्यवस्था-विरोधी नायक के रूप में स्थापित किया। उनकी फिल्मों में अक्सर भ्रष्टाचार, कॉर्पोरेट लालच और किसानों की समस्याओं को उठाया गया। विजय ने बहुत ही चतुराई से अपनी फिल्मों के माध्यम से युवाओं के बीच अपनी पैठ बनाई। उनकी फिल्मों के गीत और संवाद सीधे तौर पर सत्ता को चुनौती देते नजर आए, जिससे उनके प्रशंसकों के बीच यह धारणा प्रबल हुई कि विजय ही वह व्यक्ति हैं जो उनके हक की लड़ाई लड़ सकते हैं। उनके 'विजय मक्कल इयक्कम' (प्रशंसक क्लब) ने वर्षों तक जमीनी स्तर पर समाज सेवा की, जिससे यह क्लब एक संगठित राजनीतिक कार्यबल में बदल गया।

विजय थलपति का राजनीति में उतरना इसलिए भी साहसिक माना जा रहा है, क्योंकि उनके समकालीन और दिग्गज अभिनेता रजनीकांत और कमल हासन वह सफलता या प्रभाव नहीं दिखा सके, जिसकी उनसे उम्मीद थी। रजनीकांत ने वर्षों तक सस्पेंस बनाए रखने के बाद स्वास्थ्य कारणों से पीछे हटने का फैसला किया, वहीं कमल हासन की 'मक्कल निधि मय्यम' चुनावी मैदान में वह करिश्मा नहीं कर पाई जो एमजीआर या करुणानिधि के दौर में दिखता था। विजय ने अपने करियर के चरम पर फिल्मों को अलविदा कहकर राजनीति को पूर्णकालिक समय देने का निर्णय लिया। यह एक बड़ा जुआ है, जो उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। जहाँ रजनीकांत ने हिचकिचाहट दिखाई, वहीं विजय ने सीधे तौर पर 2026 के विधानसभा चुनावों को लक्ष्य बनाकर अपनी रणनीति स्पष्ट कर दी है।

विजय के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि रील लाइफ में समस्याओं का समाधान ढाई घंटे में हो जाता है, लेकिन रियल लाइफ की राजनीति जटिल समीकरणों, जातिगत गणित और विचारधाराओं का खेल है। तमिलनाडु की राजनीति वर्तमान में द्रमुक और अन्नाद्रमुक के बीच ध्रुवीकृत है। विजय को केवल फिल्मी संवादों से इतर एक स्पष्ट वैचारिक ढांचा पेश करना होगा। क्या वे द्रविड़ राजनीति के पुराने ढर्रे पर चलेंगे या कोई नया विकल्प देंगे? प्रशंसकों को राजनीतिक कैडर में बदलना आसान नहीं होता। एक मतदाता के रूप में प्रशंसक वफादार हो सकते हैं, लेकिन चुनाव जीतने के लिए बूथ स्तर के प्रबंधन की आवश्यकता होती है। सत्ताधारी दल और अन्य क्षेत्रीय शक्तियां विजय को एक 'पैराशूट लीडर' के रूप में चित्रित करने की कोशिश करेंगी। उनसे निपटने के लिए उन्हें प्रशासनिक समझ और नीतिगत स्पष्टता दिखानी होगी।

विजय थलापति ने निश्चित रूप से तमिलनाडु की उस परंपरा को जीवित रखा है जहाँ सिनेमाई ग्लैमर सत्ता के गलियारों तक पहुँचने का रास्ता बनता है। उनकी लोकप्रियता और युवाओं का उनके प्रति आकर्षण निर्विवाद है। हालांकि, तमिलनाडु की जनता अब पहले से अधिक जागरूक है। वे अभिनेता को प्यार तो देते हैं, लेकिन वोट विकास और ठोस नीतियों के आधार पर देते हैं। क्या विजय थलापति एमजीआर की तरह इतिहास रच पाएंगे या वे केवल एक और लोकप्रिय अभिनेता बनकर रह जाएंगे जो राजनीति की गहराई को नहीं माप सके! इसका जवाब उनकी भविष्य की राजनीति देगी। फिलहाल, उन्होंने दक्षिण की राजनीति में एक नई हलचल पैदा कर दी और यह साबित किया कि तमिल राजनीति में अभी भी 'सिनेमा ही सत्ता' का सबसे बड़ा प्रवेश द्वार है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 25 °c
न्यूनतम 22°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 10 मई 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

देश के तीसरे सीडीएस होंगे एनएस राजा सुब्रमणि

- रिटायर लेफ्टिनेंट जनरल की नियुक्ति का हो गया आदेश जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। रिटायर लेफ्टिनेंट जनरल एनएस राजा सुब्रमणि देश के अगले चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ होंगे। केंद्र ने शनिवार को इसका ऐलान किया। सुब्रमणि रक्षा मामलों के विभाग के सचिव की जिम्मेदारी भी संभालेंगे। सरकार ने वाइस एडमिरल कृष्णा स्वामीनाथन को अगला नौसेना प्रमुख नियुक्त किया है। दोनों 31 मई को कार्यभार संभालेंगे। मौजूदा सीडीएस अनिल चौहान का कार्यकाल 30 मई को खत्म हो रहा है। एनएस राजा

सुब्रमणि देश के तीसरे सीडीएस होंगे। एनएस राजा सुब्रमणि ने दिसंबर 1985 में गढ़वाल राइफल्स से सेना में कमीशन लिया था। उन्होंने नेशनल डिफेंस अकादमी से सैन्य प्रशिक्षण हासिल किया। इसके बाद वे ब्रिटेन के ब्रैकनेल स्थित जॉइंट सर्विसेज कमांड एंड स्टाफ कॉलेज भी गए। भारत लौटने के बाद उन्हें माउंटेन ब्रिगेड में ब्रिगेड मेजर की जिम्मेदारी दी गई। बाद में उन्होंने दिल्ली के नेशनल डिफेंस कॉलेज से पढ़ाई की। उनके पास लंदन के किंग्स कॉलेज से मास्टर ऑफ आर्ट्स और मद्रास यूनिवर्सिटी से डिफेंस स्टडीज में एमफिल की डिग्री भी है। सुब्रमणि वर्तमान में राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय में सैन्य सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं। यह पद उन्होंने सितंबर 2025 से संभाला हुआ है। इससे पहले उन्होंने जुलाई 2024 से जुलाई 2025 के बीच सेना उप-प्रमुख के रूप में कार्य किया था। 35 साल से ज्यादा लंबे सैन्य करियर में उन्होंने कई महत्वपूर्ण ऑपरेशनल और रणनीतिक पदों पर कार्य किया है।

टीआरई-4 छात्रों के समर्थन में उतरे राहुल गांधी

- कहा-रोजगार मांगो तो एनडीए सरकार में लाठी ही मिलती है

पटना (एजेंसी)। बिहार में टीआरई-4 शिक्षक भर्ती का विज्ञापन जारी करने की मांग को लेकर पटना में छात्रों के प्रदर्शन पर अब सियासत तेज हो गई है। प्रदर्शनकारियों पर की गई पुलिस कार्रवाई को लेकर कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने भाजपा सरकार पर तीखा हमला बोला है। राहुल गांधी ने अपने एक्स हैंडल पर घटना का वीडियो साझा किया है। इसके साथ ही उन्होंने बिहार पुलिस की कार्रवाई की निंदा की। उन्होंने लिखा कि पटना में अपने रोजगार और

भविष्य की मांग को लेकर शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे शिक्षक अभ्यर्थियों पर पुलिस ने बेरहमी से लाठीचार्ज किया। उन्होंने कहा कि देश में बेरोजगारी सबसे बड़ी समस्या बन चुकी है और इसका सबसे अधिक असर बिहार तथा उत्तर प्रदेश के युवाओं पर पड़ रहा है। लाखों युवा डिग्री और योग्यता होने के बावजूद रोजगार के लिए भटकने को मजबूर हैं, लेकिन सरकार उनकी समस्याओं के प्रति गंभीर नहीं दिख रही। राहुल गांधी ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि जब युवा सड़कों पर उतरते हैं तो उन्हें लाठियां मिलती हैं।

संदीप राशिनकर के रेखांकन फीचर की पुस्तक पुणे में लोकार्पित

इंदौर। अपनी विशिष्ट रेखांकन शैली से राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशेष पहचान बनाने वाले शहर के चित्रकार संदीप राशिनकर की रेखांकन फीचर की पुस्तक 'संदीप राशिनकर के विशेष रेखांकन फीचर' का पुणे में उनके पोते शौर्य द्वारा लोकार्पण किया गया। डॉ. बागेश्री, श्रीति, विकास पाठक, मेघना, श्रेयस की उपस्थिति में आयोजित इस आत्मीय कार्यक्रम में लोकार्पित इस कृति में संदीप के नवाचार 'रेखांकन फीचर' की वृहद श्रृंखला का संयोजन किया गया है। म्यूरल्स, ब्रास/स्टील वेंचर जैसे कला में किए गए अपने नवाचारों से चर्चित संदीप का रेखांकन फीचर भी

एक नवाचार है जिसमें विषय केंद्रित रेखांकनों के सृजन और संयोजन से कलाभिव्यक्ति का एक अलहदा वितान रचा जाता है। श्री गोविंद मूंदड़ा के संपादन में निकलने वाली चेन्नई की विशिष्ट पत्रिका 'पुष्पांजलि' में विगत कई वर्षों से विशेष रूप से निरंतरता में प्रकाशित संदीप के इस कलाविष्कार को कृति में संकलित किया गया है। विभिन्न विषयों पर केंद्रित इन विशिष्ट रंगीन रेखांकनों की श्रृंखला पाठक को एक नया कला आस्वाद देती है।

'बेतवा नदी पुनर्जीवन अभियान' आज से

भोपाल। बेतवा नदी के सूखे उद्गम स्थल को पुनर्जीवित करने और नदी को प्रदूषण से बचाने के लिए 'बेतवा अध्ययन एवं जनजागरण समूह' द्वारा जन सहभागिता पर आधारित व्यापक अभियान पिछले तीन वर्षों से चलाया जा रहा है।

इस वर्ष यह अभियान नए विश्वास, उमंग और अधिक संख्या में नदी-प्रेमियों के साथ 10 से 16 मई तक ग्राम झिरी में पुनः प्रारंभ हो रहा है। भोपाल, रायसेन, विदिशा, इंदौर, सीहोर आदी स्थानों से पर्यावरण कार्यकर्ता, नदी-प्रेमी व सामाजिक संस्थाएं इस पवित्र समागम में श्रमदान करेंगे। गौरतलब है कि बेतवा नदी में निरन्तर बढ़ते प्रदूषण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए 'बेतवा अध्ययन एवं जनजागरण समूह' ने फ़रवरी मार्च 2023 में बेतवा नदी की अध्ययन एवं जनजागरण यात्रा आयोजित की थी। सात दिन की उस

यात्रा में बेतवा नदी के उद्गम स्थल झिरी ग्राम से कुरवई तक स्थित नदी के किनारे के लगभग दो दर्जन गांवों और आधा दर्जन कस्बों एवं शहरों के स्कूल, कॉलेज के विद्यार्थियों, प्रबुद्ध जनों और ग्राम निवासियों से बेतवा की दिन ब दिन बदतर होती स्थिति पर गंभीर चर्चा और जन-जागरण किया था। यात्रा के बाद मध्य प्रदेश के मुख्य सचिव एवं मुख्यमंत्री से भी बेतवा नदी के संरक्षण की अपील की गई थी। 2025 में बेतवा नदी का उद्गम स्थल सूख गया था द्य नदी के सूखे उद्गम स्थल को जन-सहभागिता से पुनर्जीवित करने के लिए पिछले साल 'बेतवा अध्ययन एवं जनजागरण समूह' ने एक सप्ताह के श्रमदान से 55 चैक डैम बनाकर उद्गम स्थल को आंशिक रूप से पुनर्जीवित किया था। इस वर्ष भी यह समूह 10 से 16 मई से तक बेतवा नदी के उद्गम स्थल पर जन सहभागिता से श्रमदान सप्ताह का आयोजन कर रहा है।

यूपी-बिहार में आंधी-पानी का 'आतंक', 9 की मौत

- राजस्थान-एमपी में तापमान 43 डिग्री के पार, भारी गर्मी

पटना (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान में शुक्रवार को बारिश

के साथ ओले गिरे। वहीं मध्य भारत में फिर से तेज गर्मी पड़ने लगी है। बिहार के पटना समेत 7 जिलों में शुक्रवार को तेज आंधी के साथ बारिश हुई। पेड़ और बिजली गिरने से 9 लोगों की मौत हो गई। सबसे ज्यादा 5 मौत राजधानी पटना में हुईं। आंधी में 600 से ज्यादा पेड़ भी गिर गए। उत्तर प्रदेश के आगरा और जालौन में बारिश हुई। मऊ में ओले भी गिरे। शनिवार को 17 जिलों में आंधी-बारिश और बिजली गिरने का अलर्ट है। राजस्थान का बाड़मेर देश में सबसे गर्म रहा। यहां तापमान 44.6 दर्ज किया गया। वहीं जैसलमेर और फलोदी में तापमान 44 रहा। मध्य प्रदेश के 13 जिलों में आज आंधी-बारिश का अलर्ट है। शुक्रवार को रतलाम में पारा 43.5 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। इधर, गुजरात के अहमदाबाद में तापमान 43.1 डिग्री और महाराष्ट्र के वाशिम में 42.8 डिग्री दर्ज किया गया।

मध्य प्रदेश के 13 जिलों में आंधी-बारिश का अलर्ट- भोपाल, छिंदवाड़ा और रायसेन समेत 20 से ज्यादा जिलो में शुक्रवार को आंधी के साथ हल्की बारिश हुई। वहीं, दिन में कई जिलों में गर्मी का असर रहा। रतलाम में पारा 43.5 डिग्री पहुंच गया. जबकि शाजापुर में 42.6 के साथ प्रदेश का सबसे गर्म जिला रहा। उत्तर प्रदेश के 17 जिलों में आज बारिश का अलर्ट है। इस दौरान 50 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चल सकती है। पिछले 24 घंटे में आगरा, जालौन, ललितपुर और मऊ में तेज हवा के साथ बारिश हुई।

एक्टर विजय को 3 दिन बाद मिला वीसीके का समर्थन

- बहुमत के लिए जरूरी 118 विधायक पूरे ,सरकार बनाने का रास्ता साफ

कांग्रेस को हॉर्स ट्रेडिंग का है अंदेशा, सभी 5 विधायक हैदराबाद शिफ्ट

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु विधानसभा चुनाव के नतीजे आने के छठे दिन एक्टर विजय के सरकार बनाने का रास्ता साफ हो गया है। चुनाव में दो सीटें जीतने वाली वीसीके ने 3 दिन के टालमटोल के बाद शनिवार शाम में विजय की टीवीके पार्टी को अपना समर्थन पत्र सौंप दिया है। इसी के साथ टीवीके के पास सरकार बनाने के लिए जरूरी 118 विधायकों की संख्या पूरी हो गई है। वीसीके के समर्थन देने की घोषणा के कुछ

मिनट बाद इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग (आईयूएमएल) ने भी टीवीके को बिना शर्त अपने एक विधायक का समर्थन देने की घोषणा की। इधर, कांग्रेस ने हॉर्स ट्रेडिंग के डर से अपने पांच विधायकों को हैदराबाद भेज दिया है।

- **विजय लगातार 3 दिन राज्यपाल से मिले-** वीसीके से मौखिक आश्वासन मिलने के चलते एक्टर विजय 5 मई से लगातार 3 दिन राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर के पास गए और सरकार बनाने का दावा पेश किया। लेकिन उन्के पास बहुमत पूर नहीं थे। इसलिए हर बार उन्हें वापस लौटना पड़ा था। 5-6 मई को विजय ने 113 विधायकों का समर्थन दिखाया था।

बिगड़ सकता है घर का बजट, बढ़ेगी महंगाई

- साबुन-बिस्किट से लेकर तेल तक अब सब महंगा होगा
- डाबर, एचयूएल सहित एफएमसीजी कंपनियां दाम बढ़ाएंगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। एफएमसीजी सेक्टर की दिग्गज कंपनी डाबर इंडिया ने अपने प्रोडक्ट्स की कीमतें बढ़ाने के संकेत दिए हैं। कंपनी का कहना है कि पैकेजिंग मटेरियल की बढ़ती कीमतों और मिडिल-ईस्ट में तनाव बढ़ने के कारण इनपुट कॉस्ट बढ़ गई है। डाबर के अलावा हिंदुस्तान यूनिलीवर और नेस्ले जैसी कंपनियां भी महंगाई के दबाव का सामना कर रही हैं। ऐसे में आपके घर का बजट बिगड़ सकता है और साबुन, तेल, बिस्किट जैसे रोजमर्रा के सामान महंगे हो सकते हैं।

अगली तिमाही में फिर बढ़ सकती हैं कीमतें- डाबर इंडिया के ग्लोबल सीईओ मोहित मल्होत्रा के मुताबिक, कंपनी वित्त वर्ष 2026-27 की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) में

कीमतें बढ़ा सकती है। हालांकि, डाबर ने मौजूदा तिमाही में ही कीमतें करीब 4 फीसदी बढ़ाई थीं, लेकिन कच्चे माल की लागत लगातार बढ़ रही है। डाबर का कंसोलिडेटेड नेट प्रॉफिट चौथी तिमाही में सालाना आधार पर 15.75 फीसदी बढ़ा है, लेकिन कंपनी का कहना है कि इन्फ्लेशन की चुनौतियां अभी भी बनी हुई हैं। **मिडिल-ईस्ट तनाव और कच्चे तेल का असर-** कंपनियों की चिंता की सबसे बड़ी वजह पश्चिम एशिया में बढ़ती अस्थिरता है। हाल ही में ईरान और अमेरिका के बीच हुई गोलीबारी ने ऊर्जा आपूर्ति और कच्चे तेल की कीमतों को लेकर डर बढ़ा दिया है।

- **बड़ी कंपनियां कीमत बढ़ाने की तैयारी कर रहीं-** सिर्फ डाबर ही नहीं, बल्कि हिंदुस्तान यूनिलीवर, नेस्ले इंडिया, मैरिको, आईटीसी, ब्रिटानिया और गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स जैसी कंपनियों के कमेंटरी से साफ है कि इंडस्ट्री मुश्किल दौर के लिए तैयार हो रही है। इंडस्ट्री एक्सपर्ट का कहना है कि अगर मानसून औसत से कम रहता है और ग्लोबल हालात नहीं सुधरते, तो घरों के मंथली बिल में अच्छी-खासी बढ़ोतरी देखने को मिल सकती है। पिछली तिमाही में मिडिल-ईस्ट संघर्ष और हॉर्मुज रूट के बंद होने का पूरा असर इकोनॉमी पर नहीं दिखा था लेकिन अब इसका असर सप्लाई चेन पर नजर आने लगा है। माल ढुलाई महंगी हो गई है। एफएमसीजी सेक्टर के लिए यह दोहरी मार जैसा है-एक तरफ मांग बढ़ रही है।

सेवा को लेकर मचे घमासान में कैद हो गए 'भगवान'

मथुरा (एजेंसी)। ब्रज के ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व रखने वाले ठाकुर श्री हरदेव जी महाराज मंदिर में शुक्रवार रात हाई वोल्टेज ड्रामा देखने को मिला। गोस्वामी समाज के दो गुटों के बीच चल रहे आपसी विवाद के बाद पुलिस ने मंदिर के मुख्य द्वार पर ताला

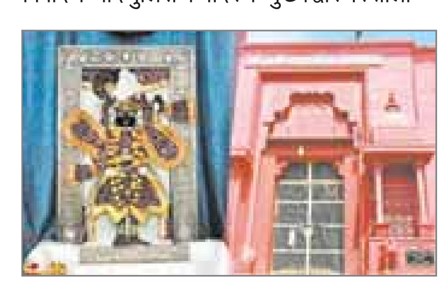

लटका दिया। इस कार्रवाई के बाद स्थानीय लोगों और श्रद्धालुओं ने पुलिस की भूमिका पर गंभीर सवाल उठाए हैं। इस वजह से श्रद्धालु मंदिर के अंदर दर्शन नहीं कर पा रहे हैं। गोस्वामी और स्थानीय लोगों का आरोप है कि गोवर्धन पुलिस ने मंदिर के मुख्य द्वार पर ताला लगवाया है। लोगों का कहना है कि गोस्वामी समाज में चल रहे निजी विवाद में पुलिस ने किस अधिकार से प्राचीन मंदिर के मुख्य दरवाजे को बंद कर दिया है।

चीन का घमंड चूर-चूर, सहमे बांग्लादेश-पाकिस्तान

- भारत ने 'फोड़' दी दुश्मन के कोने तक मार करने वाली परमाणु मिसाइल

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने परमाणु क्षमता वाली अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल का पहला परीक्षण कर लिया है। भारत के प्रमुख रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन ने शुक्रवार शाम ओडिशा के चांदीपुर के पास समुद्री तट से इस अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल (आईसीबीएम) का पहला परीक्षण किया है। एक रिपोर्ट के अनुसार, यह परीक्षण अग्नि-6 मिसाइल जैसा नहीं दिखता, लेकिन जिस मिसाइल का टेस्ट किया गया है, वह आईसीबीएम कैटेगरी की है। भारत ने यह परीक्षण कर अपने पड़ोसियों चीन, पाकिस्तान और बांग्लादेश को कड़ा संदेश दे दिया है। खासतौर पर चीन को, जो हिंद प्रशांत क्षेत्र में अपना दबदबा बढ़ाने की फिराक में रहता है। रिपोर्टों के अनुसार, डीआरडीओ ने बंगाल की खाड़ी में ओडिशा के चांदीपुर के पास एपीजे अब्दुल कलाम द्वीप (व्हीलर द्वीप)

से यह परीक्षण किया गया है। हालांकि, डीआरडीओ ने अभी तक इस आईसीबीएम टेस्ट की आधिकारिक घोषणा नहीं की है। डेटा एनालाइज करने वाली संस्था ने भी सोशल मीडिया एक्स पर बताया है कि भारत ने 8 मई को किस मिसाइल का परीक्षण किया है, यह अभी कंन्फर्म नहीं हो पाया है। हालांकि, रक्षा विशेषज्ञों का कहना है कि अगर अग्नि-6 का परीक्षण सफल रहता है तो इसे भारत की रणनीतिक और सैन्य ताकत में बड़ा इजाफा होगा। रिपोर्टों में कहा गया है कि भारत ने 6 से 9 मई के बीच बंगाल की खाड़ी के ऊपर एक बड़े हवाई क्षेत्र को प्रतिबंधित करते हुए नोटिस टू एयरमेन जारी किया था। इस परीक्षण में लगभग 3,560 किलोमीटर के नोटम कॉरिडोर का इस्तेमाल किया गया था।

अमेरिका-रूस, चीन और उत्तर कोरिया के पास आईसीबीएम तकनीक

रिपोर्ट्स के अनुसार, अभी तक केवल चार देशों अमेरिका, रूस, चीन और उत्तर कोरिया के पास ही आईसीबीएम तकनीक है। इन देशों ने 12,000 किलोमीटर से अधिक मारक क्षमता वाली आईसीबीएम तैनात की हैं। फ्रांस और ब्रिटेन के पास परमाणु हथियारों से लैस पनडुब्बी से दागी जाने वाली बैलिस्टिक मिसाइल तकनीक है। यदि भारत आईसीबीएम क्षमता को पूरा कर लेता है, तो अमेरिका-चीन समेत कोई भी देश उसकी मिसाइल हमले की जद में आ जाएगा। हाल ही में डीआरडीओ के प्रमुख समीर वी कामथ ने अग्नि-6 के बारे में कहा था-जैसे ही सरकार अनुमति देगी, हम आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं। पाकिस्तान के पास परमाणु हथियार तो हैं, मगर वह आईसीबीएम के बजाय मध्यम दूरी की मिसाइलों पर ध्यान दे रहा है।

31 देशों में से 9 के पास केवल परमाणु हथियार

31 देशों में से केवल नौ (चीन, फ्रांस, भारत, इज़राइल, उत्तर कोरिया, पाकिस्तान, रूस, यूनाइटेड किंगडम और अमेरिका) के पास परमाणु हथियार होने की जानकारी है या संदेह है। इन नौ देशों और ईरान ने 1,000 किलोमीटर से अधिक मारक क्षमता वाली मिसाइलों का उत्पादन या परीक्षण किया है। चीन और रूस ही ऐसे दो देश हैं जो अमेरिका के सहयोगी नहीं हैं, लेकिन जिनके पास अपने क्षेत्र से महाद्वीपीय अमेरिका पर हमला करने वाली बैलिस्टिक मिसाइलें दागने की सिद्ध क्षमता है। एक्सपर्ट्स का मानना है कि भारत का आईसीबीएम मिसाइल का परीक्षण करना बेहद अहम है। दरअसल, भारत को अपने करीबी पड़ोसियों जैसे पाकिस्तान-बांग्लादेश और चीन के साथ सीमा विवाद अरसे से है। जब-तब तनाव की स्थिति आ जाती है।

ईडी रेड के बाद पंजाब के मंत्री अरोरा गिरफ्तार

अरोड़ा पर 100 करोड़ की फर्जी खरीद का है आरोप

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब में आम आदमी पार्टी सरकार के मंत्री संजीव अरोड़ा पर शनिवार को ईडी ने रेड की। सूत्रों के अनुसार, रेड के वक्त वह चंडीगढ़ में अपनी सरकारी कोठी पर ही थे, यहां से उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया गया है। हालांकि इसकी कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई। रेड चंडीगढ़ में उनके सरकारी घर, दिल्ली और गुरुग्राम के ठिकानों में हुई है। चंडीगढ़ के सेक्टर-2 में ईडी टीम की 15 गाड़ियां एक साथ पहुंची और पूरा घर घेर लिया। इसके बाद बाहर सीआरपीएफ के जवान तैनात कर दिए गए। किसी को भी घर के अंदर जाने या बाहर आने की अनुमति नहीं दी जा रही है। संजीव अरोड़ा पर साल में तीसरी और महीने में दूसरी बार ईडी ने रेड की है। ईडी सोर्सेज के मुताबिक 4 ठिकानों पर सर्च ऑपरेशन चल रहा है। इसमें सरकारी घर के साथ हैंपटन स्काई रियलिटी लिमिटेड के ऑफिस पर भी रेड हुई है। अरविंद केजरीवाल ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहा कि मोदी राज में एजेंसियों का इस्तेमाल किया जा रहा है। पंजाब के लोगों के साथ पीएम मोदी धोखा कर रहे हैं। ईडी को पार्टी तोड़ने में लगाया है, किसी मनी लॉन्ड्रिंग को पकड़ने के लिए नहीं।

मारपीट करने वाले दो गिरफ्तार

इंदौर। द्वारकापुरी पुलिस ने एक अन्य मामले में भी कार्रवाई करते हुए मोनू पिता अशोक प्रजापत निवासी इंडियन स्कूल क्षेत्र और उसके साथी पवन पिता राजेंद्र महीना को गिरफ्तार किया है। दोनों पर सड़क पर एक युवक के साथ बेरहमी से मारपीट करने का आरोप है। इस घटना का वीडियो भी सामने आया था, जो सामाजिक माध्यमों पर तेजी से फैल गया था। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि शहर में कानून व्यवस्था बिगाड़ने और आम लोगों में भय का माहौल बनाने वाले तत्वों के खिलाफ लगातार अभियान चलाया जा रहा है। आने वाले दिनों में ऐसे लोगों पर और सख्ती की जाएगी।

डेढ़ लाख की 15 पेटी शराब जब्त

इंदौर। शहर में अवैध शराब की तस्करी रोकने पुलिस और आबकारी विभाग लगातार सक्रिय है। बिना दबाव प्रभाव के कार्रवाई को अंजाम दिया जा रहा है। इसी क्रम में कनाड़िया पुलिस ने आल्टो कार से शराब लेकर देवास जा रहे युवक को पकड़ा। उसके पास से डेढ़ लाख रुपए की 15 पेटी अंग्रेजी शराब जब्त की है। पुलिस को मुखबीर से सूचना मिली थी कि एसपी विला कालोनी के पास से अवैध अंग्रेजी शराब बड़ी मात्रा में देवास ले जाई जा रही है। सूचना मिलते ही पुलिस ने घेराबंदी कर कार क्रमांक एमपी–13–सीबी–0337 के चालक राहुल पिता तेजाराम मालवीय निवासी राजीव गांधी नगर देवास को पकड़ा। इधर, आबकारी विभाग ने मालवा मिल वृत्त के प्रभारी सुनील मालवीय के नेतृत्व में वाहन क्रमांक एमपी–09–यूडी–9365 को पकड़ा। बाइक पर फुटबोर्ड के गत्ते में 12 बोतल व्हीस्की थी। इसी प्रकार, वाहन क्रमांक एमपी–04–एसएल–5868 के चालक करण पिता राधेश्याम निवासी गांधीनगर से 125 क्वार्टर देशी प्लेन, मसाला, वाहन (एमपी–09–क्यूक्यू–5929) के चालक सचिन पिता फतेसिंह और विष्णु पिता गोपाल से 24 केन बोल्ट बीयर और 50 देसी प्लेन शराब पकड़ी।

आबकारी विभाग का स्वच्छता अभियान

इंदौर। कलेक्टर के निर्देश पर आबकारी विभाग ने मदिरा दुकानों और उनके आसपास निरीक्षण किया। इस दौरान कल्याण मिल, मालवा मिल, गंगानगर, भमोरी, कनाड़िया, राजमोहल्ला, पलासिया, परदेशीपुरा, राजेंद्र नगर एवं सब्जी मंडी सहित कई क्षेत्रों में दुकानों और आसपास के क्षेत्रों की सफाई और स्वच्छता की समीक्षा की गई। जहां गंदगी पाई गई, वहां तत्काल सफाई कराई गई और संबंधित अनुज्ञाधारियों को 50 मीटर की परिधि में स्वच्छता बनाए रखने के सख्त निर्देश दिए। मदिरा दुकानों के आसपास संचालित अवैध ढाबों और अनधिकृत गतिविधियों पर भी कार्रवाई की गई। कई ढाबों को बंदकर उनके प्रकरण दर्ज किए। इसी क्रम में केसरबाग रोड क्षेत्र में दोपहिया वाहन क्रमांक एमपी–09–वीएन–1144) रोककर चार पेटियों में रखी 90 केन बोल्ट बीयर के साथ सुनील पिता सुरेश और शुभम पिता सुरेश को पकड़ा।

चलती बाइक में आग लगी

इंदौर। एलआईजी चौराहे पर चलती बाइक में अचानक आग लग गई। घटना के समय आसपास लोग से लोग निकल रहे थे। तत्काल फायर ब्रिगेड को सूचना दी। फायर ब्रिगेड के पहुंचने तक बाइक पूरी तरह जल गई थी। घटना दोपहर सवा तीन बजे डीएनएस अस्पताल के सामने हुई। इससे वहां अफरा–तफरी का माहौल बन गया। आग लगने का कारण इंजन के पास शॉर्ट सर्किट होना बताया जा रहा है। घटना से विजयनगर की ओर जाने वाले ट्रैफिक को परेशानी का सामना करना पड़ा। कुछ समय के लिए लेफ्ट टर्न से वाहनों की आवाजाही भी रोक दी गई थी। हादसे के समय बाइक सवार उतर गया था, जिससे उसकी जान बच गई।

सड़क हादसे में खंडवा के युवक की मौत

इंदौर। कनाड़िया थाना क्षेत्र में बायपास पर गुरुवार देर रात दर्दनाक सड़क हादसा हुआ। खंडवा जिले के मूसाखेड़ी निवासी अशोक, जो इंदौर में ड्राइवरी का काम करते थे, बाइक से जा रहे थे कि किसी अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी थी। स्थानीय लोगों ने गंभीर घायल अवस्था में अशोक को अस्पताल पहुंचाया, लेकिन इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। हादसे के बाद वाहन चालक फरार हो गया। बाणगंगा थाना क्षेत्र में 60 वर्षीय ललिता पति मूलचंद जोशी ने गंभीर बीमारी और लगातार मानसिक तनाव के कारण आत्मघाती कदम उठाया। महिला ने घर में एसिड पी लिया। उनके बेटे ने तुरंत उन्हें निजी अस्पताल में भर्ती कराया। स्थिति गंभीर होने पर उन्हें एमवाय रेफर किया गया, जहां इलाज के दौरान मौत हो गई। परिवार ने बताया कि ललिता पिछले छह महीने से बीमारी को लेकर तनाव में थीं। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

कर्ज चुकाने के लिए बन गया तस्कर

इंदौर। नशे के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत चंदननगर पुलिस को बड़ी सफलता मिली है। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए युवक को 15.87 ग्राम एमडी ड्रग्स के साथ पकड़ा है। वह कर्ज चुकाने तस्करी करने लगा था। पुलिस ने आईटी पार्क धार रोड ग्रिड के पास से राहुल पिता मदन राठौर निवासी हैदर नगर हातोद को पकड़ा। उसने पूछताछ में स्वीकार किया कि वह नशे का आदी है और जल्दी पैसा कमाने, कर्ज चुकाने के लिए ड्रग्स सप्लाई का काम करने लगा था। आरोपी राजस्थान से कम कीमत में ड्रग्स लाकर यहां बेचता था।

द्वारकापुरी के हत्थे चढ़ा चोर, कई वारदात

इंदौर। द्वारकापुरी पुलिस ने ऐसे चोर को पकड़ा है, जो ट्रेन, हास्पिटल, भीड़भाड़ वाले इलाकों से मोबाइल चुराता था। वारदात के बाद वह अपने घर उज्जैन चला जाता था। इंदौर में वारदात के दौरान सीसीटीवी फुटेज में आए हुलिए के आधार पर आरोपी को पकड़ा। उसके पास से 5 लाख रुपए के 20 मोबाइल जब्त किए हैं। पुलिस ने बताया कि लंबे समय से राहगीरों, यात्रियों को मोबाइल चोरी की शिकायत मिल रही थी। द्वारकापुरी क्षेत्र में भी बदमाश ने वारदात की थी। वारदात के बाद से उसकी तलाश जारी थई। इसी बीच, पुलिस ने सैकड़ों सीसीटीवी कैमरे खंगाले और आरोपी गोविंद पिता खेमचंद दासवानी निवासी अंवतिपुर कालोनी निवासी उज्जैन को गिरफ्तार किया। उसके पास से आईफोन, रेडमी, सेमसंग, ओप्पो, वीवो, रिलमी, वन प्लस, टेक्नो कंपनी के मोबाइल जब्त किए हैं। आरोपी से अन्य वारदातों को लेकर सघन पूछताछ की जा रही है।

सड़क चौड़ीकरण को लेकर बवाल

इंदौर। द्वारकापुरी क्षेत्र में सड़क चौड़ीकरण और अतिक्रमण को लेकर दो पक्षों के बीच विवाद इतना बढ़ गया कि मामला हिंसक झड़प में बदल गया। दोनों पक्षों ने एक–दूसरे पर डंडों और पाइपों से हमला किया। घटना का वीडियो शुक्रवार को सामने आया, जिसमें गली में अफरा–तफरी, चीख–पुकार और मारपीट का दृश्य दिखाई दे रहा है। घटना गुरुवार को गणेश मंदिर वाली गली में हुई। पुलिस के अनुसार, यहां कॉलोनी में सड़क चौड़ीकरण को लेकर लंबे समय से विवाद चल रहा था। एक पक्ष सड़क चौड़ी करने की मांग कर रहा था, जबकि दूसरे पक्ष पर निर्माण कर अतिक्रमण करने के आरोप लगाए जा रहे थे। रहवासियों के मुताबिक, निगम की टीम के जाने के बाद सड़क चौड़ीकरण को लेकर दोनों पक्षों में फिर बहस शुरू हुई। देखते ही देखते विवाद बढ़ गया और दोनों ओर से लोग डंडे और पाइप लेकर आमने–सामने आ गए। इस दौरान महिलाओं के साथ भी धक्का–मुक्की और झूमाझटकी हुई। वीडियो में युवक का गला डंडे से दबाने की कोशिश भी दिखाई दे रही है।

राजा रघुवंशी हत्याकांड के मुख्य आरोपी सहित चार की जमानत याचिकाएं निरस्त

सोनम की जमानत को मेघालय सरकार ने चुनौती दी, 12 मई को सुनवाई

शिलांग। इंदौर के बहुचर्चित राजा रघुवंशी हत्याकांड में कानूनी शिकंजा कसता जा रहा है। शिलांग स्थित सत्र न्यायालय ने इस मामले के मुख्य आरोपी राज कुशवाहा सहित कुल चार आरोपियों को राहत देने से साफ मना कर दिया है। न्यायालय ने इनकी जमानत याचिकाओं को सिरे से खारिज करते हुए जेल में ही रहने का आदेश दिया है। वहीं दूसरी ओर, इस मामले में आरोपी सोनम रघुवंशी को पूर्व में मिली जमानत के खिलाफ अब राज्य सरकार ने मोर्चा खोल दिया है। सत्र न्यायालय ने मुख्य आरोपी राज कुशवाहा की दूसरी जमानत अर्जी पर सुनवाई करते हुए उसे स्वीकार करने योग्य नहीं माना। राज के साथ-साथ इस आपराधिक साजिश में शामिल अन्य आरोपी विशाल, आनंद और आकाश की अर्ज़ियों को भी अदालत ने ठुकरा दिया है। हालांकि, कोर्ट द्वारा जारी विस्तृत आदेश की प्रति अभी सार्वजनिक नहीं हुई। परंतु सूत्रों के अनुसार अपराध की जघन्यता को देखते

हुए आरोपियों को बाहर रखना न्याय प्रक्रिया के लिए उचित नहीं समझा गया।

जमानत पर सरकार की आपत्ति

इस मामले में नया मोड़ तब आया जब मेघालय सरकार ने आरोपी सोनम रघुवंशी को मिली जमानत को रद्द करवाने के लिए हाई कोर्ट का रुख किया। सरकार ने अपनी दलील में कहा है कि मामले की निष्पक्ष सुनवाई और साक्ष्यों की सुरक्षा के लिए आरोपी का हिरासत में रहना आवश्यक है। उच्च न्यायालय इस संवेदनशील विषय पर आगामी 12 मई को सुनवाई करने वाला है, जिसके बाद सोनम की कानूनी स्थिति स्पष्ट होगी।

कार्रवाई पर सरकार का बचाव

इस पूरे प्रकरण में पुलिस की कार्यप्रणाली पर उठ रहे सवालों के बीच राज्य के उपमुख्यमंत्री प्रेस्टन तिनसोंग ने महत्वपूर्ण वक्तव्य दिया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि जांच दल और विशेष जांच दल (एसआईटी) ने अपनी पूरी क्षमता के साथ कार्य किया है। उपमुख्यमंत्री के अनुसार, पुलिस बल पूरी तरह कुशल और आधुनिक संसाधनों से लैस है, इसलिए जांच में किसी भी प्रकार की शिथिलता का प्रश्न ही नहीं उठता। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि न्यायालयों द्वारा जमानत देना या न देना एक कानूनी प्रक्रिया का हिस्सा है और इसे पुलिस की विफलता के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। सरकार का मानना है कि पुलिस ने पर्याप्त साक्ष्य जुटाए हैं और अब पूरा ध्यान अपराधियों को कड़ी सजा दिलाने पर केंद्रित है। आने वाले दिनों में उच्च न्यायालय का निर्णय इस हत्याकांड की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

कारों में तोड़फोड़ करने वाले दो बदमाशों का जुलूस निकाला गया

इलाके में दहशत फैलाने के लिए आधा दर्जन वाहनों पर पथराव

इंदौर। द्वारकापुरी क्षेत्र में देर रात कारों में तोड़फोड़ कर दहशत फैलाने वाले बदमाशों पर पुलिस ने सख्त कार्रवाई की। गुरुवार शाम गिरफ्तार किए गए दोनों आरोपियों का शुक्रवार को पुलिस ने इलाके में जुलूस निकाला। इस दौरान बड़ी संख्या में लोग घरों और दुकानों के बाहर निकल आए। पुलिस ने आरोपियों को पूरे क्षेत्र में घुमाकर यह संदेश देने का प्रयास किया कि कानून व्यवस्था बिगाड़ने वालों को बख्शा नहीं जाएगा। घटना द्वारकापुरी थाना क्षेत्र की सत्यदेव नगर, नॉर्थ मोहल्ला और सूर्यदेव नगर कॉलोनियों की है। बुधवार देर रात करीब दो बजे क्षेत्र के रहवासी थाने पहुंचे और शिकायत दर्ज कराई कि कुछ बदमाशों ने सड़क किनारे खड़ी कई चार पहिया गाड़ियों पर पत्थर फेंककर उनके कांच फोड़ दिए हैं। अचानक हुई इस घटना से इलाके में डर और तनाव का माहौल बन गया था।

सीसीटीवी फुटेज से पहचान

शिकायत मिलने के बाद पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची और आसपास लगे निगरानी कैमरों की जांच शुरू की। फुटेज में दो युवक संदिग्ध गतिविधियों में नजर आए। जांच के बाद उनकी पहचान बाबू नाथ और उसके साथी आरसी चौहान के रूप में हुई। पुलिस ने दोनों को हिरासत में लेकर पूछताछ की, जिसमें उन्होंने तोड़फोड़ की बात स्वीकार कर ली। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि वे इलाके में अपना डर और दबदबा बनाना चाहते थे। लोग उन्हें बदमाश के रूप में पहचानें, इसी उद्देश्य से उन्होंने सुनसान रात में खड़ी कारों को निशाना बनाया। पुलिस अधिकारियों के अनुसार आरोपियों ने जानबूझकर ऐसी वारदात को अंजाम दिया, ताकि क्षेत्र में दहशत फैल सके।

दुर्लभ कैंसर सर्जरी से मिली नई जिंदगी, डॉक्टरों ने निकाला 17 इंच का कैंसर

डेढ़ साल तक बढ़ती रही छाती की गांठ, छह घंटे चला ऑपरेशन

इंदौर। एक बेहद जटिल और दुर्लभ कैंरोग सर्जरी सफलतापूर्वक कर चिकित्सकों ने 50 वर्षीय मरीज को नई जिंदगी दी। मरीज की छाती में पिछले करीब डेढ़ से दो वर्षों से लगातार बढ़ रही गांठ ने शरीर के कई महत्वपूर्ण अंगों को प्रभावित कर दिया था। आर्थिक तंगी के कारण वह समय पर उपचार नहीं करा सका, जिससे बीमारी तेजी से फैलती चली गई। स्थिति इतनी गंभीर हो चुकी थी कि चार बड़े अस्पतालों ने उसकी सर्जरी करने से मना कर दिया था। मरीज जुलवानिया का रहने वाला है। लंबे समय से उसे छाती में असहनीय दर्द रहता था। धीरे-धीरे सांस लेने में तकलीफ बढ़ने लगी और सामान्य गतिविधियां भी कठिन हो गईं। भारी गांठ के कारण शरीर का संतुलन बिगड़ने लगा था और मरीज का चलना-फिरना भी मुश्किल हो गया था। परिवार की आर्थिक हालत कमजोर होने के कारण इलाज लगातार टलता रहा।

कई अंगों तक पहुंचा कैंसर- मरीज ने पिछले सप्ताह इंडेक्स मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में उपचार शुरू कराया। सर्जरी विभागाध्यक्ष डॉ अमित कटलाना ने बताया कि मरीज को सारकोमा प्रकार का कैंसर था। यह बीमारी शरीर की मांसपेशियों और ऊतकों में विकसित होती है और धीरे-धीरे आसपास के अंगों को अपनी चपेट में ले लेती है। डॉक्टरों के अनुसार कैंरोग छाती की बाईं पसलियों और आसपास की मांसपेशियों से शुरू हुआ था। बाद में यह फेफड़े, डायग्राम, लिवर और किडनी के आसपास तक फैल गया। जांच में सामने आया कि गांठ का आकार करीब 45 सेंटीमीटर लंबा और 30 सेंटीमीटर चौड़ा हो चुका था। इतना बड़ा ट्यूमर छाती के अंदरूनी हिस्से पर लगातार दबाव बना रहा था, जिससे मरीज की सांस लेने की क्षमता भी प्रभावित हो रही थी।

अब खतरे से बाहर – अस्पताल प्रशासन के अनुसार मरीज की हालत अब स्थिर है। उसे गहन चिकित्सा कक्ष से सामान्य वार्ड में स्थानांतरित कर दिया गया है। मरीज ने भोजन लेना भी शुरू कर दिया है और डॉक्टरों को उम्मीद है कि अगले पांच से सात दिनों में उसे अस्पताल से छुट्टी मिल सकती है। विशेषज्ञों ने बताया कि बायोप्सी की विस्तृत रिपोर्ट आने के बाद आगे की चिकित्सा तय की जाएगी। नियमित जांच और निगरानी के जरिए यह सुनिश्चित किया जाएगा कि बीमारी दोबारा न फैले।

महू नाका चौराहे पर भाजपा नेताओं व ट्रैफिक पुलिस में विवाद, दो निलंबित

चौराहे पर हंगामे के बाद चक्काजाम, अधिकारियों ने शुरू की जांच

इंदौर। महू नाका चौराहे पर शुक्रवार दोपहर भाजपा नेताओं और यातायात पुलिस के बीच विवाद हो गया। भाजपा के विधानसभा–4 प्रभारी वीरेंद्र शेडगे ने यातायात पुलिसकर्मियों पर अभद्र व्यवहार और मारपीट का आरोप लगाया। घटना के बाद बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता मौके पर पहुंच गए और विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। स्थिति बिगड़ने पर यातायात विभाग ने कार्रवाई करते हुए आरक्षक शेखर और सूबेदार लक्ष्मी धुर्वे को निलंबित कर दिया। वहीं यातायात थाना प्रभारी राधा यादव को मैदानी जिम्मेदारी से हटाकर कार्यालय से संबद्ध कर दिया गया। सहायक पुलिस आयुक्त शिवेंदु जोशी ने बताया कि पूरे मामले की जांच के लिए चौराहे के सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं।

मोबाइल पर बात पर विवाद

जानकारी के अनुसार वीरेंद्र शेडगे दोपहिया वाहन से कहीं जा रहे थे। इसी दौरान महू नाका चौराहे पर हेलमेट जांच अभियान चल रहा था। यातायात पुलिस का कहना है कि शेडगे मोबाइल पर बात करते हुए वाहन चला रहे थे, इसलिए उन्हें रोकने का प्रयास किया गया। आरोप है कि वाहन नहीं रुकने पर एक पुलिसकर्मी ने हाथ उठा दिया, जिसके बाद

विवाद बढ़ गया। वहीं वीरेंद्र शेडगे का आरोप है कि उन्हें रोककर थप्पड़ मारा गया। उन्होंने पूरे मामले में वैधानिक कार्रवाई की मांग की है।

चक्काजाम से प्रभावित

घटना की सूचना मिलते ही भाजपा कार्यकर्ता मौके पर पहुंच गए और संबंधित पुलिसकर्मियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग करने लगे। विरोध बढ़ने पर कार्यकर्ताओं ने महू नाका चौराहे पर चक्काजाम कर दिया। सड़क पर प्रदर्शन के कारण क्षेत्र में यातायात व्यवस्था प्रभावित हो गई और वाहनों की लंबी कतारें लग गईं। हालात संभालने के लिए अतिरिक्त पुलिस बल तैनात करना पड़ा।

टीआई राधा यादव की सफाई

यातायात थाना प्रभारी राधा यादव ने कहा कि विवाद शुरू होने के समय वह मौके पर मौजूद नहीं थीं। उनके अनुसार वह विभागीय बैठक में थीं और सूचना मिलने के बाद ही महूनाका पहुंचीं। उन्होंने बताया कि बाद में उन्हें उषा नगर क्षेत्र में यातायात व्यवस्था संभालने भेज दिया गया था। राधा यादव ने कहा कि सीसीटीवी फुटेज से स्पष्ट हो जाएगा कि विवाद की शुरुआत के दौरान वह वहां मौजूद नहीं थीं।

किसने क्या कहा

भाजपा नगर अध्यक्ष ने कहा कि मुझे विधायक गौड़ का फोन आया था। उन्होंने शेडगे के साथ मारपीट की जानकारी दी थी। इसके बाद मैंने दोषी अधिकारियों पर कार्रवाई करने डीसीपी ट्रैफिक को शिकायत की थी। विवाद के दौरान टीआई मौजूद थी या नहीं, मुझे जानकारी नहीं है। जबकि, विधायक मालिनी गौड़ का कहना है कि हमारे कार्यकर्ता से मारपीट करना उचित नहीं है। शेडगे ने गलती की थी, तो उसका चालान काटना था। मैंने नगर अध्यक्ष को मौके पर जाने को कहा था। इसके बाद क्या हुआ मुझे पता नहीं। सोशल मीडिया से पता चला कि दो पुलिसकर्मी और टीआई पर कार्रवाई हुई है।

बरसात से पहले तालाब भरने की तैयारी, मशीनों से जल मार्ग साफ

प्रमुख तालाबों तक निर्बाध जल पहुंचाने पर निगम का फोकस

इंदौर। शहर में आगामी वर्षा ऋतु को देखते हुए नगर पालिक निगम ने जल संरक्षण और पारंपरिक जल स्रोतों को पुनर्जीवित करने की दिशा में बड़े स्तर पर काम शुरू कर दिया है। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत शहर के प्रमुख तालाबों से जुड़े जल मार्गों की सफाई, गहरीकरण और चौड़ीकरण का कार्य लगातार जारी है। निगम द्वारा प्रतिदिन छह विशाल खुदाई मशीनों की मदद से विभिन्न चैनलों में जमा गाद, मिट्टी और कचरे को हटाया जा रहा है, ताकि वर्षा का पानी बिना किसी रुकावट सीधे तालाबों तक पहुंच सके। नगर निगम प्रशासन का मानना है कि यदि बारिश के पानी को सही दिशा और पर्याप्त मार्ग मिल जाए तो शहर के तालाबों की जल क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। यही कारण है कि इस बार केवल औपचारिक सफाई तक सीमित न रहकर जल प्रवाह की पूरी व्यवस्था को मजबूत करने पर जोर दिया जा रहा है।

30 मई तक कार्य पूर्ण का लक्ष्य- नगर निगम आयुक्त क्षितिज सिंघल ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि सभी

चैनलों की सफाई और मरम्मत का काम तय समय सीमा के भीतर गुणवत्ता के साथ पूरा किया जाए। उन्होंने कहा कि बारिश शुरू होने से पहले सभी मार्ग पूरी तरह तैयार होने चाहिए, ताकि एक भी बूंद पानी व्यर्थ न जाए और तालाबों में पर्याप्त जल संचय हो सके। उन्होंने यह भी कहा कि जल संरक्षण केवल सरकारी योजना नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। नागरिकों की भागीदारी से ही इस अभियान को सफल बनाया जा सकता है। निगम ने लोगों से अपील की है कि वे जल स्रोतों में कचरा न डालें और आसपास की स्वच्छता बनाए रखने में सहयोग करें।

बिलावली और पिपलियापाला पर काम

शहर के महत्वपूर्ण तालाबों में शामिल बिलावली तालाब और पिपलियापाला तालाब से जुड़े जल मार्गों पर तेजी से काम चल रहा है। केलोद करताल चैनल की कुल लंबाई लगभग तीन हजार मीटर है, जिसमें बारह सौ मीटर हिस्से का काम पूरा किया जा चुका है। इसी तरह मोरोद माचला चैनल की कुल लंबाई साढ़े तीन हजार मीटर है और यहां एक हजार पचास मीटर क्षेत्र में सफाई और गहरीकरण का कार्य पूरा हो चुका है। राऊ–बिलावली चैनल, जो वर्षा जल को तालाब तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, उसकी कुल लंबाई चार हजार मीटर है। इसमें अब तक अठारह सौ मीटर हिस्से में कार्य पूरा कर लिया गया है। वहीं मधुर मिलन गार्डन से पिपलियापाला तालाब तक बनाए जा रहे जल मार्ग की कुल लंबाई एक हजार मीटर है, जिसमें तीन सौ मीटर क्षेत्र में काम पूरा हो चुका है। बाकी हिस्सों में भी लगातार कार्य जारी है।

बारिश के पहले ठीक होगा सर्विस रोड

इंदौर। लवकुश चौराहे पर निर्माणाधीन लेवल 2 फ्लाईओवर ब्रिज की प्रस्तावित सर्विस रोड के निर्माण बारिश के पहले किया जाए। यह निर्देश शुक्रवार को इंदौर विकास प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालन अधिकारी परीक्षित झाड़े ने बैठक में दिए। उन्होंने कहा कि इंदौर–उज्जैन रोड के समानांतर निमार्णाधीन लेवल 2 फ्लायओवर ब्रिज की लवकुश चौराहे से इं?डो जर्मन टूल रूम के सामने तक सर्विस रोड निर्माण कार्य प्रगति पर है। इस दौरान 12 मई से लव कुश चौराहा से मरीमाता की ओर ट्रैफिक को निर्माण कार्य पूर्ण होने तक एमआर 10 पर डायवर्ट किया जाएगा।

बकाया कर वसूली में निगम सख्त, दो मार्केट की 50 दुकानें सील की

कर जमा नहीं करने वालों पर कार्रवाई, ढोल बजाकर चेतावनी

इंदौर। नगर निगम ने बकाया संपत्ति कर की वसूली को लेकर अब सख्त रुख अपनाना शुरू कर दिया। लंबे समय से कर जमा नहीं करने वाले व्यापारिक प्रतिष्ठानों के खिलाफ शुक्रवार को नगर निगम ने बड़ी कार्रवाई करते हुए दो प्रमुख व्यावसायिक परिसरों की कुल 50 दुकानों को बंद कर दिया। कार्रवाई के दौरान निगम की टीम ढोल के साथ बाजार पहुंची, जिससे पूरे क्षेत्र में हलचल मच गई और अन्य व्यापारियों को भी बकाया कर जमा करने का संदेश दिया गया। नगर निगम की यह कार्रवाई शहर के झोन क्रमांक 3 क्षेत्र में की गई। निगम अधिकारियों ने बताया कि बार-बार सूचना और नोटिस देने के बावजूद संबंधित संचालकों द्वारा कर राशि जमा नहीं की जा रही थी, जिसके बाद यह कदम उठाया गया।

दो मार्केट पर निगम का शिकंजा

झोन क्रमांक 3 के सहायक राजस्व अधिकारी अनिल निगम ने जानकारी देते हुए

बताया कि जेल रोड स्थित सिद्धि विनायक मार्केट में कई वर्षों से संपत्तिकर बकाया चल रहा था। इस परिसर पर लगभग तीन से साढ़े तीन लाख रुपए का कर बाकी है। यहां अलग-अलग मंजिल पर संचालित दुकानों में से 40 दुकानों को बंद करने की कार्रवाई की गई। उन्होंने बताया कि संबंधित संचालकों को पिछले वर्ष भी नोटिस जारी किया गया था। उस समय व्यापारियों ने जल्द कर जमा करने का भरोसा दिया था, लेकिन निर्धारित समय बीतने के बाद भी राशि जमा नहीं की गई।

इसके बाद निगम ने दोबारा चेतावनी दी, फिर भी भुगतान नहीं होने पर कार्रवाई की गई। इसी प्रकार मिश्रा चेंबर में भी नगर निगम की टीम ने कार्रवाई करते हुए 10 दुकानों को बंद किया। इस परिसर पर लगभग चार लाख रुपए का संपत्ति कर बकाया बताया गया है। दोनों परिसरों को मिलाकर कुल 50 दुकानों पर निगम ने ताले लगा दिए।

बकाया जमा करने तक दुकानें बंद

नगर निगम अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि जब तक बकाया कर राशि जमा नहीं की जाती, तब तक संबंधित दुकानों को नहीं खोला जाएगा। कार्रवाई के दौरान निगम अमले ने व्यापारियों को तत्काल कर जमा करने के निर्देश दिए और भविष्य में समय पर कर भुगतान करने की समझाइश भी दी।

'द चाय कैफे' पर फायर करने वाला धराया, दहशत के लिए वारदात की

थानों में चोरी, आर्म्स एक्ट, मारपीट जैसे 9 अपराध पंजीबद्ध

इंदौर। क्षेत्र में दहशत फैलाने की नीयत से बदमाश ने चाय चौकी कैफे पर फायर कर दिया था। घटना से सनसनी फैल गई थी। मामले को गंभीरता से लेते हुए लसूड़िया पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। 13 अप्रैल को फरियादी आर्यन पिता राजेन्द्र पटेल निवासी मां शारदा नगर ने रिपोर्ट मे बताया था कि ऋषभ मेरा दोस्त है। उससे चाय चौकी कैफे पर किसी बात को लेकर कुछ दिन पहले विवाद हो गया था। घटना वाले दिन रात साढ़े 11 बजे मैंने ऋषभ को कैफे पर राजीनामा करने के लिए बुलाया तो ऋषभ सिंह राजपूत गालियां देने लगा। तैश में आकर उसने कैफे पर रखे स्टूल एवं कुर्सियों से मुझे चोट पहुंचाई। घटना के बाद उसने पिस्टल निकाली और मुझे जान से मारने की नीयत से सामने की तरफ से दो तीन बार फायर किए।

बट से कपाल पर मारा

जब मुझे गोली नहीं लगी तो उसने पिस्टल की बट से मेरे कपाल पर मारा। इसके कैफे पर बैठे ग्राहक भागने लगे। तभी ऋषभ भी भगदड़ में गिर गया। इसी दौरान मौका पाकर उसका (ऋषभ का) दोस्त निखिल पिस्टल लेकर भाग गया। फरियादी की रिपोर्ट पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ धारा 109(1), 296(ए) का केस दर्ज किया था। मामले की गंभीरता को देखते हुए टीआई राजकुमार यादव ने टीम गठित की। टीम ने मशक्कत के बाद आरोपी ऋषभ सिंह राजपूत को गिरफ्तार कर लिया था। आरोपी ऋषभ ने घटना में प्रयुक्त पिस्टल उसके साथी आरोपी हैनी उर्फ निखिल गोस्वामी द्वारा लेकर भागना बताया। ऋषभ की निशानदेही पर आरोपी निखिल की तलाश की गई थी।

मदर्स डे पर विशेष

रमेश रंजन त्रिपाठी

लेखक स्तंभकार हैं।

माता कुमाता नहीं होती

संसार के सभी रिश्तों में माँ का स्थान सर्वोपरि है। धरती को सभी प्राणियों की माता कहा जाता है क्योंकि वह सभी का पालन-पोषण करती है, सभी पर अपना प्यार लुटाती है। लेकिन जब कोई रावण जैसा राक्षस पृथ्वीवासियों पर अत्याचार करने लगता है तो यही धरती माता दुष्टों के संहार के लिए ईश्वर को मृत्युलोक में आने की प्रेरणा भी देती है। माता स्वाभाविक रूप से पुत्र के लिए ममता से भरी होती है परंतु यदि उसका बुरा बेटा दूसरों को सताने की सीमा पार करने लगे तो वह उसे भी दंडित करने से नहीं हिचकिचाती। सजा का सबसे कठोर स्वरूप है मौत की सजा। हमारी फ़िल्मों में ऐसे आदर्श माँ के किरदारों को गढ़ा गया है जो अपने अन्यायी पुत्र की जान लेने से पीछे नही हटतीं।

आदि शंकराचार्य अपनी पूजा में हुई त्रुटियों के लिए देवी माँ से क्षमायाचना करते हुए कहते हैं, 'कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति'। अर्थात् बुरा बेटा होना संभव है, किन्तु कहीं भी बुरी माता नहीं होती। गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'श्रीरामचरितमानस' में माता का स्थान पिता से बड़ा बताते हुए बहुत सुंदर बात कही है। रानी कैकेयी पूर्व में महाराज दशरथ द्वारा दिए गए दो वरदानों के बदले उनसे अपने पुत्र भरत के लिए अयोध्या का राज्य और श्रीराम के लिए चौदह वर्षों का वनवास मांग लेती हैं। तब वनगमन के पूर्व श्रीराम अपनी माता महारानी कौशल्या से विदा लेने जाते हैं। पूरी बात सुनकर दुख के सागर में डूबी कौशल्या अवाक् रह जाती हैं। यहाँ वे कहती हैं, 'जौं केवल पितु आयसु ताता, तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता। जौं पितु मातु कहेउ बन जाना, तौ कानन सत अवध समाना'। (हे तात ! यदि केवल पिता जी की आज्ञा हो तो माता को पिता से बड़ी जानकर वन को मत जाओ। किन्तु यदि माता-पिता दोनों ने वन जाने के लिए कहा है तो वन तुम्हारे लिए सैकड़ों अयोध्या के समान है।) 'द जंगल बुक' के प्रसिद्ध लेखक रुडयार्ड किपलिंग ने अत्यंत मार्मिक बात कही है कि भगवान हर जगह नहीं हो सकते इसलिए उन्होंने माँ बनाई।

संसार के सभी रिश्तों में माँ का स्थान सर्वोपरि है। धरती को सभी प्राणियों की माता कहा जाता है क्योंकि वह सभी का पालन-पोषण करती है, सभी पर अपना प्यार लुटाती है। लेकिन जब कोई रावण जैसा राक्षस पृथ्वीवासियों पर अत्याचार करने लगता है तो यही धरती माता दुष्टों के संहार के लिए ईश्वर को मृत्युलोक में आने की प्रेरणा भी देती है। माता स्वाभाविक रूप से पुत्र के लिए ममता से भरी होती है परंतु यदि उसका बुरा बेटा दूसरों को सताने की सीमा पार करने लगे तो वह उसे भी दंडित करने से नहीं हिचकिचाती। सजा का सबसे कठोर स्वरूप है मौत की सजा। हमारी फ़िल्मों में ऐसे आदर्श माँ के किरदारों को गढ़ा गया है जो अपने अन्यायी पुत्र की जान लेने से पीछे नही हटतीं।

माता द्वारा अपने बेटे को गोली मारने का सबसे चर्चित और लोकप्रिय प्रसंग प्रसिद्ध निर्माता निर्देशक महबूब खान

की फिल्म 'मदर इंडिया' (1957) का है। कहानी कुछ ऐसी है कि गांव के सूदखोर लाला ने राधा के परिवार को बहुत दुख दिया है। राधा के कंगन लाला के यहां गिरवी हैं। राधा का छोटा बेटा बिरजू लाला से बहुत नाराज रहता है। एक बार लाला की बेटी राधा के कंगन पहनकर बिरजू को चिढ़ाती है। गुस्से से आगबबूला हुआ बिरजू लाला की बेटी का अपहरण कर लेता है। बिरजू को समझाने का प्रयास किया जाता है लेकिन वह किसी की नहीं सुनता। लाला की पुत्री को छोड़ने के लिए राधा भी बिरजू को मनाने की कोशिश करती है। बदले की आग में पागल हुआ बिरजू किसी की नहीं सुनता, तब अन्य कोई उपाय शेष न रहने पर लड़की की इज्जत बचाने के लिए राधा अपने हाथों से बिरजू को गोली मारकर मौत के घाट उतार देती है। सबसे प्रिय संतान को माँ द्वारा मृत्युदंड देने की घटना आदर्शवाद की पराकाष्ठा है। दर्शकों की भावुक प्रतिक्रिया ने 'मदर इंडिया' को सुपरहिट क्लासिक फिल्म बना दिया। 'मदर इंडिया' महबूब खान की अपनी ही 1940 की फ़िल्म 'औरत' का रीमेक थी। सन् 1955 की शशधर मुखर्जी की फ़िल्म 'मुनीम जी' में भी मालती एक अबला की आबरू की रक्षा के लिए अपने डाकू बेटे रतन को गोली मार देती है।

माँ द्वारा अपराधी पुत्र की हत्या करने का मार्मिक प्रसंग सन 1999 की महेश मांजरेकर की फ़िल्म 'वास्तव' में फ़िल्माया गया है। विषम परिस्थितियों से जूझते हुए एक शरीफ इंसान रघु मुंबई का सबसे बड़ा अपराधी बन जाता है। राजनीति और अपराध के दुश्चक्र में फंसे रघु को देखते ही गोली मारने का आदेश जारी कर दिया जाता है। विरोधी गैंग और पुलिस से भागता हुआ रघु अपनी पत्नी और परिवार को सुरक्षित रखने के लिए घर लौटकर माँ शांता से घिघियाता है कि वह उसे बचा ले। मूल रूप से नेक इंसान रघु का, हालातों से पराजित होकर अपराधी बन जाने पर, मानसिक संतुलन बिगड़ना स्वाभाविक था। व्याकुल शांता समझ जाती है कि न विपरीत परिस्थितियाँ सुधरेंगी, न ही रघु की मानसिक अवस्था। वह बड़े दुखी मन से जीवन का सबसे कठोर निर्णय लेती है और अपने हाथों से लाड़ले बेटे को गोली मारकर मुक्ति प्रदान करती है।

इन उदाहरणों में अपने पुत्र के लिए जान छिड़कने वाली ममता की मूर्ति माँ जब बेटे के आचरण से परिवार या समाज पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को देखती है तो उसकी करुणा समष्टि के लिए जाग जाती है, वह सभी की ऐसी माँ बन जाती है जो कभी कुमाता नहीं हो सकती।

व्यंग्य

माँ की सिसकियां

सुनील चतुर्वेदी

मैंने सपने में देखा
मेरी प्रथम पुण्यतिथि के दिन
मेरा बड़ा बेटा
अपनी पत्नी के साथ
कार में बैठकर
लांग ड्राइव पर
निकला हुआ है ।

छोटा बेटा
अपनी मंगेतर के साथ
शहर के पार्क में बैठकर
बतिया रहा है ।

मेरी पत्नी
घर के बाहर खड़ी होकर
दोनों बेटों के आने की
प्रतीक्षा कर रही है।

लेकिन मेरी मां
एक अंधेरे कमरे में बैठकर
मुझे याद करते हुए
सिसकियां भर रही है।
शायद उसे
मुझे जन्म देने से
मेरी मृत्यु तक का
एक एक दिन
याद आ रहा था।
शायद उसे
मेरे लौट आने की
उम्मीद भी थी।

माँ का हिसाब

रविकांत राऊत

रज्जो के चार बच्चे थे। चारों को उसने जन्म दिया, पाला, बीमारी में रातें जागकर बिताईं। चारों को उसने अपनी तनख्वाह से नहीं अपनी ज़िंदगी से खिलाया। चारों अब शहर में हैं। रज्जो अब भी गाँव में है। उसी घर में जहाँ छत के एक कोने से बारिश में पानी टपकता है। उसी चूल्हे पर जो लकड़ी से जलता है और आँखें जलाता है।

मदर्स डे पर बड़े बेटे ने व्हाट्सएप पर फूलों की फोटो भेजी। पड़ोसन के व्हाट्स-एप पर। रज्जो के पास स्मार्टफोन नहीं है।

पड़ोसन ने पढ़कर सुनाया। रज्जो ने कहा – 'अच्छा।' फिर चूल्हे की तरफ मुड़ गई।

उसने कभी शिकायत नहीं की। यह उसकी कमज़ोरी नहीं थी – यह उसका तरीका था दुनिया से लड़ने का।

बिना बताए, बिना रोए, बिना किसी से माँगे।

जो माँ चिल्लाती नहीं, जो माँ रोती नहीं, जो माँ कहती नहीं कि 'मेरे साथ यह हुआ', उस माँ को दुनिया ठीक ही समझती है।

और दुनिया ग़लत नहीं है।

वो ठीक ही है। बस थकी हुई है।

रज्जो साल में एक बार दर्पण देखती है –

जब गांव में किसी की बेटी की शादी में जाना हो, या किसी के जनाज़े में। दोनों मौकों पर वो एक ही चेहरा देखती है। अपना चेहरा। जो उम्र से पहले बूढ़ा हो गया। वो दर्पण से पूछती नहीं कि यह कब हुआ।

वो जानती है कब हुआ। क्योंकि जब-जब किसी को उसकी ज़रूरत थी, वो वहाँ थी।

लघुकथा

मां

अविनाश अग्निहोत्री

बच्ची को रश्मि से दूर हुए आज पूरे तीन दिन हो गए थे। पर अब भी रो रो कर उसका बुरा हाल था। तब उसके पति ने उसे ढांढस बंधाते हुए कहा,अब उस नन्ही सी जान के दूर हो जाने का इतना भी क्या गम करना। ये सब तो पहले से तय हुआ था कि हमें तय अनुबंध के अनुसार ये

बच्चा तो उन्हें सौंपना ही था। क्या तुम भूल गई रश्मि इस समझौते पर हम दोनों ने हस्ताक्षर भी किए थे।जिससे अब वो बच्ची हर लिहाज़ से उनकी ही है। तो अब उसके लिए भला क्या दुख मनना। मुझे सब कुछ याद है रोहित पर वो बच्ची हमारी पहली संतान है। जिससे अब हम इस जीवन में कभी नहीं मिल पाएंगे। अरे पर वो समझौता तो एक मजबूर औरत ने किया था और आज जो रो रही है, वह तो एक मां है।

मदर्स डे

जादू जैसी माँ

हर दुख-दर्द दूर करती है,
मां जादू जैसी लगती है।
मां प्रतीक है वरदान का,
धरती पर रूप भगवान का।

मां जब हंसती-मुस्काती है,
तमस डर के भाग जाती है।
मुझे थपकी दे सुलाती है,
मां ज्यों स्वप्न थपथपाती है।

मेरी नजर को उतारती है,
हर मुसीबत से बचाती है।
धूप में छांव बन जाती है,
सूरज से भी लड़ जाती है।

धूप में पत्थर तोड़ती मां,
कभी ना हिम्मत हारती मां,
बच्चे सब रहे सुखी घर में,
दिनभर दौड़ती-भागती मां।

खुद को सिरहाने रखती माँ

- नलिन खोईवाल

कब कुछ ना हमसे कहती माँ।
कितनी तकलीफें सहती माँ।

हर मुश्किल से बचकर रहता।
साथ दुआ बनकर चलती माँ।।

बदनजरें न लगे बच्चों को।
तब मिर्ची जैसी जलती माँ।।

भूख लगे बच्चों को जब भी।
तब चक्की जैसी पिसती माँ।।

बच्चों को भोजन मिल जाए।
तब दिन-रात जुती रहती माँ।।

बच्चे सुरक्षित रहे घर में।
हर एक बला से लड़ती माँ।।

स्वप्न बुरे ना आए हमको।
खुद को सिरहाने रखती माँ।।

माँ की दीपशिखा

- अनुपमा अनुश्री

तुम पापा की परी तो हो
लेकिन हो पहले
'मेरी दीपशिखा'
तुम में छुपा है
अंश दिव्यता का।

स्वर्ण रश्मियाँ तुम्हें
छूकर पावन करती हैं
चंद्र किरणें तुम्हें
मनभावन करती है
पुरवाई देती है संगीत
अग्नि तुम्हारा
हौसला बनती है।

हर साँस मंत्रोंच्चार है
कटि पर करधनी
नहीं कटार है
पैरहन नहीं अंगार है
श्रृँगार ही नहीं प्रहार है
दुश्मनों पर वार है।

सभ्यता,संस्कृति
संस्कार की प्रतिमूर्ति
तुम्हें मर्यादित आचरण
ही बस स्वीकार है ।

लघुकथा

सूरजमुखी की रीढ़

ब्रजेश कानूनगो

उनकी कोठी के खूबसूरत बगीचे में दुनियाभर के सुंदर फूलों के पौधे उन्होंने बड़े शौक से लगाए हुए थे। एक खास फुलवारी में सैकड़ों सूरजमुखी के पौधों पर उतने ही प्यारे फूलों की बहार आई हुई थी। आठवीं कक्षा के छात्र अपने पोते को उन्होंने सूरजमुखी फूलों की ओर इशारा करते हुए कहा, देखो राहुल इन सब फूलों का चेहरा खिलने पर सूरज की ओर ही होता जाता है। हां दादाजी मुझे यह पता है और इसके पीछे का विज्ञान भी मैं जानता हूं। राहुल ने फुलवारी के फूलों पर अपना हाथ घुमाते हुआ कहा।

रामनाथजी अपने पोते के साथ रोज की तरह सुबह की सैर को निकले हुए थे। प्रदेश के बड़े उद्योगपति रहे थे वे। बेटे को जमा जमाया कारोबार सौंपकर इधर राजनीति और समाजसेवा के क्षेत्र में भी सक्रिय हो गए थे।

उनकी कोठी के खूबसूरत बगीचे में दुनियाभर के सुंदर फूलों के पौधे उन्होंने बड़े शौक से लगाए हुए थे। एक खास फुलवारी में सैकड़ों सूरजमुखी के पौधों पर उतने ही प्यारे फूलों की बहार आई हुई थी।

आठवीं कक्षा के छात्र अपने पोते को उन्होंने सूरजमुखी फूलों की ओर इशारा करते हुए कहा, देखो राहुल इन सब फूलों का चेहरा खिलने पर सूरज की ओर ही होता जाता है।

हां दादाजी मुझे यह पता है और इसके पीछे का विज्ञान भी मैं जानता हूं। राहुल ने फुलवारी के फूलों पर अपना हाथ घुमाते हुआ कहा।

अरे वाह! तुम तो बड़े होशियार हो, जरा बताओ ऐसा क्यों होता है? रामनाथजी ने उत्सुकता से मुस्कुराते हुए कहा।

दादाजी, सूरजमुखी के तने में ऑक्सिन नाम का एक प्लांट हार्मोन पाया जाता है। यह हार्मोन सूर्य के प्रकाश के प्रति बहुत संवेदनशील होता है। जब सूरज की रोशनी तने के एक हिस्से पर पड़ती है, तो ऑक्सिन हार्मोन तने के छाया वाले हिस्से में जाकर जमा हो जाता है। हार्मोन की अधिकता के कारण छाया वाला हिस्सा तेजी से बढ़ता है, जिससे तना सूर्य की दिशा में झुक जाता है। सूरजमुखी को पता होता है कि सूरज कब और कहाँ से उगने वाला है। दिन के समय फूल पूर्व से पश्चिम की ओर सूरज का पीछा करता रहता है। रात में यह अपनी जैविक घड़ी के अनुसार धीरे-धीरे वापस पूर्व की ओर मुड़ जाता है ताकि अगली सुबह की पहली किरण का स्वागत कर सके।

यह भी दिलचस्प है कि सूरज के साथ मुड़ने की यह प्रक्रिया केवल युवा सूरजमुखी के पौधों में देखी जाती है। जब सूरजमुखी का फूल पूरी तरह खिल जाता है और परिपक्व हो जाता है, तो उसका तना सख्त हो जाता है और वह स्थायी रूप से पूर्व दिशा की ओर मुख करके स्थिर हो जाता है। पोते के मुख से सूरजमुखी का विज्ञान सुनकर रामनाथ जी भौचक्क रह गए। उनके मस्तिष्क की कोई जैविक घड़ी सक्रिय हो गई थी।

उनके भीतर कुछ उद्वेलित होने लगा। कहीं वे भी तो किसी सूरजमुखी की तरह के व्यक्ति नहीं हैं? सूरजमुखी का फूल जिधर दम उधर हम के मुहावरे को साकार करता है। सूरज में ऊर्जा है, शक्ति है तो उसके साथ साथ सूरजमुखी अपने तने को इस तरह घुमाते जाते हैं कि खिले हुए फूलों का मुख शक्तिशाली सूर्य की ओर ही बना रहे। वातावरण में सूर्य की सत्ता और धूप का प्रभाव बढ़ रहा था, रामनाथजी क हाथ संयोग से अपनी रीढ़ की हड्डी को सहलाने लगा। कहीं कुछ चुभ रहा था, जो भी राजनीतिक दल सत्ता में होता था वे सदैव उसके समर्थक बने रहते थे।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.-453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

'मदर्स डे' पर दिल की बात

प्रो. मनोज कुमार

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

चिथड़े में लिपटी माँ को भी याद कर लें

'मदर्स डे' क्या होता है, यह समझाने के लिए बाजार सज गया है। हम बाजार के बहकावे में आ गए हैं। दही-शक्कर खिलाती माँ और अपने भीतर के दर्द को समेटकर हर बार बच्चे की मुस्कराहट पर निसार होती माँ अब 'मदर्स डे' में सिमट गई है। आए दिन खबरें पढ़ते हैं कि एक बेटे ने माँ को इसलिए मौत के घाट उतार दिया कि उसने मोबाइल के लिए पैसे नहीं दिए या कि उसकी अनाप-शनाप जरूरतों को पूरा करने के लिए माँ की गाँठ में पैसे नहीं थे। एक पुरानी कहानी इस संदर्भ में स्मरण हो आता है कि एक बार एक बेटे ने गुस्से में कुल्हाड़ी से माँ की गर्दन उड़ा दी। कटी हुई गर्दन ने शिकायत करने के बजाय पूछा-बेटा ऐसा करते हुए तुझे चोट तो नहीं लगी। ये है हमारा 'मदर्स डे' और कौन सा बाजार इस 'दिल' को बेच पाएगा और कौन सी औलाद है जो इसे खरीद पाएगी।

अपने हाथों से दही-शक्कर खिलाकर कामयाबी की कामना करती माँ, अपने बच्चों की बलाएँ उतराती माँ और देहरी लाँघ कर जाते बच्चे को अपने आँचल में बँधा मुड़ा-तुड़ा दस का नोट देकर पूरी दुनिया खरीद लेने की ताकत देती माँ को इस बदलते समय ने बाजार बना दिया है। हमारी सनातन संस्कृति में 'मदर्स डे' जैसा कोई कांसेप्ट कभी था ही नहीं। शाम ढले जब थका-हारा बच्चा घर लौटता और दुलार के साथ माँ की गोदी में सिर रखकर जन्नत का अहसास करने लगता उसी समय 'मदर्स डे' हो जाता था। भागते-दौड़ते समय में यह पल-छीन, बाजार ने छीन लिया है। 'मदर्स डे' का मतलब बता दिया है कि माँ के लिए एक महँगा तोहफा खरीद कर उसे दो, सेल्फी लो और दुनिया को बता दो कि तुम अमीर नहीं, माँ गरीब हो गई है। वो दस रूपये का मुड़ा-तुड़ा नोट जो तुम्हें इस बाजार को खरीद लेने की ताकत देता था, वह पूँजी हम सबने गँवा दी है। हम सब फिर एक बार 'मदर्स डे' मनाने के लिए उतावले हो रहे हैं।

'मदर्स डे' क्या होता है, यह समझाने के लिए बाजार सज गया है। हम बाजार के बहकावे में आ गए हैं। दही-शक्कर खिलाती माँ और अपने भीतर के दर्द को समेटकर हर बार बच्चे की मुस्कराहट पर निसार होती माँ अब 'मदर्स डे' में सिमट गई है। आए दिन खबरें पढ़ते हैं कि एक बेटे ने माँ को इसलिए मौत के घाट उतार दिया कि उसने मोबाइल के लिए पैसे नहीं दिए या कि उसकी अनाप-शनाप जरूरतों को पूरा करने के लिए माँ की गाँठ में पैसे नहीं थे। एक पुरानी कहानी इस संदर्भ में स्मरण हो आता है कि एक बार एक बेटे ने गुस्से में कुल्हाड़ी से माँ की गर्दन उड़ा दी। कटी हुई गर्दन ने शिकायत करने के बजाय पूछा-बेटा ऐसा करते हुए तुझे चोट तो नहीं लगी। ये है हमारा 'मदर्स डे' और कौन सा बाजार इस 'दिल' को बेच पाएगा और कौन सी औलाद है जो इसे खरीद पाएगी।

हम 'मदर्स डे' नहीं मनाते हैं बल्कि माँ की त्याग और उत्सर्ग को याद करने के लिए कभी वीरांगना लक्ष्मीबाई का स्मरण कर लेते हैं तो कभी 'मदर इंडिया' देख लेते हैं। माँ बच्चे की पहली पाठशाला होती है। उसे नैतिक शिक्षा देती है और संबंधों का मूल्य समझाती है और जब वह ऐसे में खुद को विफल होता देखती है तो 'मदर इंडिया' हो जाती है। पुरानी बात क्या कहें, एक दशक पहले टीकमढ़ में एक सरपंच माँ ने अपने ही बेटे को गाँव निकाला दे दिया कि नियम के खिलाफ जाकर उसने शराब पीने की जुर्रत की थी। माँ का दुलार और उसकी सख्ती से मिलकर हमारे सनातनी समाज का 'मदर्स डे' मनता है। बाजार ने 'मदर्स डे' पर अपना कारोबार खड़ा कर लिया है लेकिन आज भी सैकड़ों मध्यम वर्गीय भारतीय परिवार हैं जिनके लिए भगवान से पहले माँ है। ये परिवार एक दिन का 'मदर्स डे' नहीं मनाते हैं, इनके लिए हर पल छीन 'मदर्स डे' होता है। मैं ऐसे कई अनुभव का साक्षी हूँ। एक बड़े उत्सव के आयोजन में एक बड़े संपादक को आमंत्रित किया और ऐनवक्त में उनकी ना हो गई। दुख हुआ और जब कारण पता चला कि माँ और पिता की तबीयत के चलते वो शामिल नहीं हो पा रहे हैं

तो दुख कपूर की तरह उड़ गया। यहाँ एक बार फिर श्रवण कुमार याद आ गए। ऐसे भारतीय समाज में 'मदर्स डे', 'फादर्स डे' के बहाने बाजार की घुसपैठ आतंकित करता है। डराता है कि हमारे बच्चे कभी श्रवण कुमार को जान पाएंगे कि नहीं?

बाजार का अपना चरित्र है और उसने देखा कि भारतीय चरित्र की बुनियाद को इस नकली दिनों के बहाने और कमजोर किया जा सकता है तो उसने साल में एकाध दर्जन ऐसे दिन खड़े कर दिए। हमेशा की तरह बाजार सज गया है। जिस माँ ने कभी स्कूल की देहरी तक नहीं पहुँच पायी, उसका औलाद उसे 'आई लव यू ममा' का लुभावना चमकदार महँगा कार्ड भेंट कर रहा है। माँ को समझ ही नहीं आता कि ये क्या है, उसका क्या करे? उसके लिए तो उपहार उसकी औलाद है जो कुछ पल के लिए उसकी गोद में लेट जाए और वह दुलार से उसके सिर पर हाथ फेरने लगे तो हर पल माँ का हो जाता है। माँ समझ ही नहीं पा रही है कि ये 'मदर्स डे' होता क्या है? और औलाद के लिए माँ के पास वक्त नहीं, बाजार से खरीदे गए महँगे तोहफे हैं। हम कौन से समय में किस दुनिया में खड़े हैं। कवियों ने शायरों ने माँ को ऐसा महिमामंडित किया कि बाप की औकात दिखा दी गई। क्या माँ और पिता के बिना हम अपनी दुनिया की कल्पना कर सकते हैं। ऐसे में मशहूर जावेद अख़्तर एक सभा में बेबाकी से इस पर तल्ख शब्दों में ऐतराज जाहिर करते हैं तो लगता कि वे 'मदर्स डे' की औकात दिखा रहे हैं। बाजार को उसकी औकात बता रहे हैं।

भारत के 130 करोड़ से अधिक नागरिकों में बमुश्किल एक करोड़ भी नहीं होंगे जिसकी औलाद के पास 'मदर्स डे' मनाने की औकात हो। यहाँ यह भी दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि अपनी आर्थिक हैसियत को दरकिनार कर वह महँगा तोहफा इसलिए खरीद रहा है कि चार लोग क्या कहेंगे? माँ के पैरों में जन्नत तलाश करने वाला बच्चा अपनी माँ से कब बड़ा हो गया? माँ की कमजोर होती आँख के लिए एक सुंदर सा चश्मा बनाने के लिए औलाद के पास पैसे नहीं है, पैसे नहीं है माँ की दवा लाने के लिए और पैसे हैं तो वक्त नहीं माँ के लिए। यह भी आज के 'मदर्स डे' का सबसे बड़ा सच है। बाजार ने बच्चों को निर्मम बना दिया है।

अभी एक तस्वीर मेरी नजरों से गुजरी जिसमें एक माँ अपने बच्चे को कमर में आँचल से लपेट कर किसी धन्ना सेठ के बच्चे की शादी में लाईट लेकर चली जा रही है। डीजे में नाचते, खुशियों में रुपये लुटाते इस समाज की नजर ना तो उस माँ पर गई और ना ही उस नन्हें बच्चे पर। माँ कभी गरीब नहीं होती है, यह तस्वीर इस बात की तस्दीक करती है। माँ अमीर होती है अपने संकल्प से, अपने मातृत्व से और वो अपनी औलाद को दुनिया का सबसे कामयाब आदमी बनते देखना चाहती है, भले ही उसे आधा पेट खाना मिले। शरीर पर चिथड़े की सूरत में बदलती साड़ी सही मायने में माँ को परिभाषित करती है। बाजार जिस दिन ये तमीज हमें सिखा जाएगा फिर किसी 'मदर्स डे' की जरूरत नहीं होगी।

मातृदिवस विशेष

डॉ.मुरलीधर चाँदनीवाला

लेखक साहित्यकार हैं।

जीवन की सम्पूर्ण पाठशाला है माँ

माँ हमेशा पीछे ही खड़ी रहना पसंद करती है। मनुष्य जाति का जो सांस्कृतिक और सामाजिक इतिहास है, वह हमें यही बताता है कि माँ सर्वोपरि होकर भी छिपी हुई रहती है। सारे सूत्र उसके हाथ में हैं, लेकिन वह श्रेय स्वयं को देने के लिये कभी आगे नहीं आती। इस संसार में जितने भी घर हैं, वे सब माँ ने बसाये। वह तिनका-तिनका जोड़कर घर बसाती है, और हमें उस घर का मालिक बना देती है। माँ केवल जन्मदात्री नहीं है, वह हमारे जीवन की सम्पूर्ण पाठशाला है, हमारी आस्थाओं का जाग्रत मंदिर है, वह हमारे जीवन की ऐसी पवित्र नदी है, जो कभी नहीं सूखती। माँ एक ऐसा नाम है, जो कठिन से भी कठिन परिस्थिति में शान्ति ही देता है।

माँ से अलौकिक और अद्वितीय क्या है इस संसार में? जिसकी माँ जन्म देते ही चल बसी हो, वह सौ वर्ष की आयु में भी मरते समय अपनी माँ को ही पुकारता है। वह बेसुध और अचेत होकर भी माँ को बहुत व्याकुल होकर याद करता है, क्योंकि उसे पक्का भरोसा रहता है कि अंतिम समय में एक माँ ही है, जो दौड़ी चली आयेगी। माँ जीवन का पहला और आखिरी भरोसा है। मनुष्य के सामने यदि माँ और भगवान, ये दो विकल्प खुले हों, तो वह हर हाल में माँ को ही चुनेगा। वह भगवान को ऊपर-ऊपर जानता है, लेकिन माँ को वह भीतर से जानता है। वह माँ के भीतर रहकर आया है, उसने माँ के अंतरंग की भित्तियों को छुआ है, वहाँ से अपने लिये संजीवनी ली है। ये सब बातें केवल मनुष्य के लिये नहीं, इस संसार के छोटे से छोटे और बड़े से बड़े जीवधारी पर भी उतनी ही लागू होती है।

'माँ ये है, माँ वो है', ऐसी अनगिनत बातें आजकल गीत और कविताओं में ढाली जाती हैं। माँ पर गीत लिख कर हमारे कई कवि-गीतकार अमर हो गये। माँ पर बहुत लिखा गया, लेकिन बहुत लिखा जाना महाप्रलय के अंत तक भी नितान्त अधूरा ही रहेगा। माँ सतह पर नहीं, हमारी उस गहराई में उतरी हुई है, जिसे हम ही कभी नहीं देख पायेंगे। उसमें उतरना तो बहुत दूर की बात मालूम होती है। जिसे हम माँ कहते हैं, जिसने हमें जन्म दिया, उसकी महिमा से हम जीवन भर अपरिचित बने रहते हैं। हम माँ से एक ही चीज चाहते हैं-पल-प्रतिपल सुरक्षा। हम चाहते हैं ऐसी छाया, ऐसा स्पर्श, जो कभी हमसे अलग न हो।

माँ हमेशा पीछे ही खड़ी रहना पसंद करती है। मनुष्य जाति का जो सांस्कृतिक और सामाजिक इतिहास है, वह हमें यही बताता है कि माँ सर्वोपरि होकर भी छिपी हुई रहती है। सारे सूत्र उसके हाथ में हैं, लेकिन वह श्रेय स्वयं को देने के लिये कभी आगे नहीं आती। इस संसार में जितने भी घर हैं, वे सब माँ ने बसाये। वह तिनका-तिनका जोड़कर घर बसाती है, और हमें उस घर का मालिक बना देती है। माँ केवल जन्मदात्री नहीं है, वह हमारे जीवन की सम्पूर्ण पाठशाला है, हमारी आस्थाओं का जाग्रत मंदिर है, वह हमारे जीवन की ऐसी पवित्र नदी है, जो कभी नहीं सूखती। माँ एक ऐसा नाम है, जो कठिन से भी कठिन परिस्थिति में शान्ति ही देता है।

हजारों बरस पहले जगद्गुरु शंकराचार्य ने लिखा था- 'कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति'। माँ कभी कुमाता नहीं होती। वह अपने सब बच्चों को समान भाव से देखती है। उसके लिये हाथ की सब उँगलियाँ बराबर है। वह एक को प्यार करे, दूसरे को बिलखता छोड़ दे, ऐसा कभी नहीं हुआ। यदि ऐसा दिखाई देता है, तो वह केवल भ्रम है। संसार में एक माँ ही है, जो सब विवादों से परे है। माँ के लिये कहा गया एक भी अपशब्द महापाप के गर्त में ले जाने वाला है, इसमें कुछ भी अतिशयोक्ति नहीं। यदि माँ के भीतर तक देखने वाली आँखें हों, तो दिखाई देगा कि माँ सचमुच क्षमा है, दया है, शान्ति है।

किसी फिल्म का एक बेहतरीन संवाद है-'मेरे पास माँ है'। जिसके पास माँ है या जो माँ के पास है, वह कितना मालदार और बेफिक्र इंसान है, यह वही जानता है। माँ तो वह है, जो ठुकरा दिये जाने के बाद भी अपनी सन्तति को आँचल से ढँक लेती है। वह कभी हमारा कवच बन जाती है, कभी ढाल बन जाती है। हमारे सब दुःख और कष्ट जो अपने ऊपर ले ले, वह माँ है। एक माँ कितनी बार अपने बच्चे को काल के मुख से बाहर खींच लाती है, इसका कोई हिसाब काल के पास भी नहीं मिलता। माँ अपने होते हुए और न होते हुए भी बच्चों को अनिष्ट के चक्र में पीसने से बचा ले जाती है, और हमें पता भी नहीं चलता।

आप सचमुच माँ के पास हैं, तो यकीन मानिये कि आप चारों तरफ से सुरक्षित हैं। आप माँ के किले में हैं। आपके ऊपर कोई धावा नहीं बोल सकता। आप सचमुच माँ के पास हैं, तो आपको किसी भी देवता की शरण में जाने की जरूरत नहीं। आप माँ की शरण में हैं, तो कोई पितृदोष आपको नहीं लग सकता, न कोई आपकी ग्रहदशा पर आँच आने दे सकता है। माँ अपने बच्चों के कपाल पर ऐसा काला टीका लगाकर छोड़ देती है, कि वह जीवन भर बुरी नजर से बचा रहता है। माँ दुःख और दुर्भाग्य के दुष्प्रभावों पर ऐसी कील ठोंक देती है, जिसे न देव उखाड़ सकते हैं न दानव। यही माँ की शक्ति है, यही माँ का प्रताप है।

गीता और उपनिषदों में जिसे आत्मा कहा जाता है, संसार की भाषा में तो वह माँ ही है। माँ ही हमारी वह आत्मा है, जो कभी जीर्ण नहीं होती। वह कभी नहीं मरती। वह परम शान्ति है, आनंदमयी है, चैतन्यमयी है। कभी माँ को अनुभव कीजिये, वह आपको आपकी आत्मा ही लगेगी। कभी आत्मा को अनुभव कीजिये, वह आपको आपकी माँ ही लगेगी। इसलिये माँ ही आत्मा है। वही हमारे भीतर बैठी हुई है, और हमें भीतर से सहारा दे रही है। माँ छिप कर भी हमें देख लेती है, लेकिन हम कितनी बार माँ को देख नहीं पाते और समझ नहीं पाते।

माँ को खोजने के लिये कहीं मत जाइए। न वैष्णोदेवी, न पावागढ़। वह आपके पास है। वह आपके जन्म से लेकर अंत तक के लिये आपके आसपास बनी हुई है। वह आपको अकेला छोड़कर कहीं जा ही नहीं सकती। आपको जन्म देने के बाद आपके सब उत्तरदायित्व उसने अपने ऊपर ले रखे हैं। वह कभी मुँह फेर कर नहीं बैठती। आपके ही बारे में सोचती है, आपके ही सपने देखती है। माँ की ओर से इससे बड़ा कौन सा उपहार, कौन सा आश्वासन?

मदर्स डे

रागिनी श्रीवास्तव

लेखक कनाडा निवासी साहित्यकार हैं।

माँ को उनके प्रति प्रेम का अहसास कराने का दिन

मदर्स डे की शुरुआत 20वीं सदी की शुरुआत में मानी जाती है। इसका श्रेय मुख्य रूप से एना जार्विस को दिया जाता है, जिन्होंने अपनी माँ की स्मृति में इस दिन को मनाने की पहल की। उनकी माँ, 'एना रीव्स जार्विस,' समाज सेवा और महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए कार्य करती थीं। अपनी माँ के प्रति गहरे प्रेम और सम्मान के कारण 'एना जार्विस' ने एक ऐसा दिन स्थापित करने का संकल्प लिया, जब हर व्यक्ति अपनी माँ के प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर सके। जो बाद में एक राष्ट्रीय और फिर अंतरराष्ट्रीय उत्सव बन गया। यह दिन विशेष रूप से माताओं के योगदान, त्याग और स्नेह को स्वीकार करने के लिए समर्पित है। अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन और कई यूरोपीय देशों में इसे हर वर्ष मई महीने के दूसरे रविवार को बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। कई चर्चों में इस दिन विशेष प्रार्थनाएँ आयोजित की जाती हैं, जहाँ माताओं के स्वास्थ्य और सुख-समृद्धि के लिए प्रार्थना की जाती है। स्कूलों और संस्थानों में भी बच्चों को इस दिन का महत्व समझाया जाता है, ताकि वे अपने जीवन में माँ के स्थान को पहचान सकें।

नास्ति मातृसमा छाया, नास्ति मातृसमा गतिः।
नास्ति मातृसमा त्राता, नास्ति मातृसमा प्रिया॥
(माँ जैसी छाया, सहारा, रक्षक और प्रिय कोई नहीं)

माँ केवल एक रिश्ता नहीं, बल्कि वह भावना है जो हमारे जीवन को अर्थ और दिशा देती है। माँ का प्यार निस्वार्थ, अटूट और अनमोल होता है। वह हर परिस्थिति में अपने बच्चों के साथ खड़ी रहती है, चाहे सुख हो या दुख।

माँ के लिए हमारा प्यार शब्दों से कहीं अधिक गहरा होता है। फिर भी, मदर्स डे एक ऐसा दिन है जो हमें यह विशेष अवसर देता है कि हम अपने दिल की बात कह सकें माँ, हमें आपसे बहुत प्यार है, और आप हमारे जीवन की सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं। यही एहसास माँ के चेहरे पर सच्ची खुशी और संतोष की चमक ले आता है।

मदर्स डे की शुरुआत 20वीं सदी की शुरुआत में मानी जाती है। इसका श्रेय मुख्य रूप से एना जार्विस को दिया जाता है, जिन्होंने अपनी माँ की स्मृति में इस दिन को मनाने की पहल की। उनकी माँ, 'एना रीव्स जार्विस,' समाज सेवा और महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए कार्य करती थीं। अपनी माँ के प्रति गहरे प्रेम और सम्मान के कारण 'एना जार्विस' ने एक ऐसा दिन स्थापित करने का संकल्प लिया, जब हर व्यक्ति अपनी माँ के प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर सके।जो बाद में एक राष्ट्रीय और फिर अंतरराष्ट्रीय उत्सव बन गया।

यह दिन विशेष रूप से माताओं के योगदान, त्याग और स्नेह को स्वीकार करने के लिए समर्पित है। अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन और कई यूरोपीय देशों में इसे हर वर्ष मई महीने के दूसरे रविवार को बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। कई चर्चों में इस दिन विशेष प्रार्थनाएँ आयोजित की जाती हैं, जहाँ माताओं के स्वास्थ्य और सुख-समृद्धि के लिए प्रार्थना की जाती है। स्कूलों और संस्थानों में भी बच्चों को इस दिन का महत्व समझाया जाता है, ताकि वे अपने जीवन में माँ के स्थान को पहचान सकें।

पाश्चात्य समाज में मदर्स डे का स्वरूप काफी भावनात्मक और पारिवारिक होता है। इस दिन बच्चे अपनी माँ को कार्ड, फूल (विशेषकर कार्नेशन फूल), चॉकलेट और अन्य उपहार देते हैं। कई लोग अपनी माँ के लिए विशेष भोजन तैयार करते हैं या उन्हें बाहर घुमाने ले जाते हैं। परिवार के सभी सदस्य मिलकर इस दिन को एक उत्सव की तरह मनाते हैं, जिससे माँ को यह महसूस हो कि उनका योगदान कितना महत्वपूर्ण है।

हालाँकि, समय के साथ मदर्स डे का व्यवसायीकरण भी बढ़ा है। बड़ी-बड़ी कंपनियाँ इस अवसर पर विशेष ऑफर और विज्ञापन चलाती हैं, जिससे यह दिन एक बड़े व्यावसायिक आयोजन का रूप भी ले चुका है। फिर भी, इसके मूल भाव माँ के प्रति प्रेम और सम्मान को लोग दिल से निभाते हैं। यह उन सभी महिलाओं के लिए भी सम्मान का दिन है, जो किसी न किसी रूप में मातृत्व की भूमिका निभाती हैं जैसे दादी, नानी, या संरक्षक। यह दृष्टिकोण इस दिन को और अधिक व्यापक और समावेशी बनाता है।

पाश्चात्य देशों में माँ के प्रति सम्मान और प्रेम व्यक्त करने के लिए मनाया जाने वाला 'मदर्स डे' अब भारत में भी लोकप्रिय हो गया है। वैश्वीकरण, सोशल मीडिया और आधुनिक जीवनशैली के प्रभाव से यह परंपरा भारत के शहरी ही नहीं, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों तक भी पहुँच चुकी है। हालांकि भारतीय संस्कृति में माँ का स्थान सदैव सर्वोच्च रहा है फिर भी 'मदर्स डे' ने इस भाव को एक विशेष दिन के रूप में व्यक्त करने का अवसर दिया है। भारतीय समाज में माँ के प्रति सम्मान कोई नई बात नहीं है। हमारे यहाँ 'मातृ देवो भवः' की परंपरा रही है, जो माँ को ईश्वर के समान मानती है। लेकिन आधुनिक जीवन की व्यस्तता में अक्सर लोग अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाते। ऐसे में मदर्स डे एक अवसर बनकर सामने आता है, जब लोग अपनी माँ के लिए समय निकालते हैं, उन्हें उपहार देते हैं और उनके प्रति अपने प्रेम को खुलकर व्यक्त करते हैं।

हाल के समय में, सोनी चॅनेल टी.वी के प्रोग्राम इंडियन आइडल की प्रतिभागी 'अंकिता महुआगिरि' ने अपने नाम के साथ अपनी माँ का नाम जोड़कर एक नई मिसाल पेश की है। यह कदम केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक संदेश भी देता है कि माँ का योगदान भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना पिता का।

भारत में भी अब स्कूलों, कॉलेजों और संस्थानों में भी मदर्स डे मनाया जाने लगा है। बच्चे अपनी माँ के लिए कार्ड बनाते हैं, कविताएँ लिखते हैं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से अपने भाव व्यक्त करते हैं। सोशल मीडिया पर भी लोग अपनी माँ के साथ तस्वीरें साझा करते हैं और उनके प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करते हैं।

कुछ लोग यह मानते हैं कि मदर्स डे केवल एक पाश्चात्य परंपरा है और भारतीय संस्कृति में इसकी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यहाँ माँ का सम्मान हर दिन किया जाता है। यह विचार सही भी है, लेकिन बदलते समय के साथ ऐसे विशेष दिनों का महत्व भी बढ़ गया है।

मदर्स डे भले ही पश्चिमी दुनिया से आया हो, लेकिन भारत में इसे अपनाने का तरीका पूरी तरह भारतीय भावनाओं से जुड़ा हुआ है। आज के दौर में, जब समय के अभाव में रिश्ते कहीं पीछे छूटते जा रहे हैं, यह दिन हमें याद दिलाता है कि माँ के लिए सबसे बड़ा उपहार कोई महँगा तोहफा नहीं, बल्कि हमारा समय, सम्मान और स्नेह है। यह दिन केवल उपहार देने तक सीमित नहीं होना चाहिए। माँ के साथ समय बिताना, उनकी बातें सुनना, उनके कामों में हाथ बँटाना और उन्हें धन्यवाद कहना यही सच्चे अर्थों में इस दिन को खास बनाते हैं। एक छोटी-सी मुस्कान, एक प्यार भरा आलिंगन या कुछ स्नेह भरे शब्द माँ के दिल को अपार खुशी से भर देते हैं।

'माँ है तो सब कुछ है, माँ नहीं तो कुछ भी नहीं।'

(ईश्वर हर जगह नहीं हो सकता था, इसलिए उसने माँ को बनाया।)

'रुडयार्ड किपलिंग'।

स्वच्छता सर्वेक्षण अभियान को लेकर निकले अधिकारियों को सोशल मीडिया पर नागरिकों ने दिखाया आईना

सोहागपुर। शनिवार को स्वच्छता सर्वेक्षण अभियान 2025-26 को लेकर अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावी, नगरपालिका अधिकारी, सह सफ़ाई प्रभारी अमित परसाई आदि ने नगर के शास्त्री वार्ड, इंदिरा वार्ड एवं तिलक वार्ड के कई स्थानों का निरीक्षण किया इस लेकिन इसकी खबर जब जनता-जनार्दन को लगी। सोहागपुर में एक कहावत प्रसिद्ध है कि पढ़ें न लिखे सोहागपुर रहते हैं। अर्थात् सोहागपुर बुद्धिजीवियों का नगर हैं। जब से नवीन नगर पंचायत परिषद का गठन हुआ है। तभी से सफाई व्यवस्था चरमराई हुई है। लेकिन इसका खामियाजा आगामी नगर पंचायत परिषद को भुगतना पड़ेगा। इसमें दो राय नहीं। सोहागपुर के लगभग समस्त सोशल मीडिया पर स्वच्छता की कलाई खोलते हुए फोटो, वीडियो एवं अलंकृत करके शब्दावली से कटाक्ष किए।

नागरिक ठगा का ठगा रह जाएगा – इस संबंध में इंदिरा वार्ड के वरिष्ठ चार बार के पार्षद धर्मदास बैलवशी ने समस्त नगर वासियों से विनम्र निवेदन' शीर्षक से लिखा कि नगर में बिगड़ती सफाई व्यवस्था नगर के प्रत्येक नागरिक के सामने है। अभी स्वच्छता सर्वेक्षण नगर में किया जा रहा है। जिस कारण से दो दिन से नगर परिषद के अधिकारी, सफाई प्रभारी और अनगिनत मुकद्दम सक्रिय हुए है ।जिस कारण सफाई कुछ ठीक ठाक करवाई जा रही है। मैं नगर परिषद के सभी सफाई के जिम्मेदार सीएमओ,सफाई प्रभारी और मुकद्दमो से पूछना चाहता हूं ।कि यदि आप इस तरह की सक्रियता का 50% भी सफाई व्यवस्था पर प्रतिदिन देने लगे तो सच नगर कचरा मुक्त हो जाएगा। नगर में सवच्छता सर्वेक्षण के कारण नगर परिषद से कर्मचारियों को सभी वार्डो में डोर टू डोर फीडबैक के लिए भेजा जा रहा है। कर्मचारी आपके घर आयेंगे आपके मोबाइल से आनलाइन ही फीडबैक भेजेंगे। आपके मोबाइल में स्वच्छता एप डाउनलोड करवाएंगे इस एप पर कुछ सवाल होंगे जिनके उत्तर आपको हा,नहीं में टिक करना है

जैसेः1ःआपके मोहल्ले में प्रति दिन कचरा गाड़ी आती है। हा,नहीं 2ः नालियों की सफाई प्रति दिन होती है। हां,नहीं

3ःसफाई कर्मचारी प्रतिदिन सफाई करने आते है। हा , नहीं आदि ऐसे सवाल एप पर होते है। कर्मचारी आपके मोबाइल से इन पर टिक करे ।तो आप जरूर देखे कि आपने जैसा जवाब दिया है। वहीं टिक किया है नहीं। या आप स्वयं एप पर जानकारी अपलोड करें।

कही ऐसा न हो कि आप 'नही' बोले और कर्मचारी एप पर 'हा' भर दे। आपके सही जबाव ही सफाई व्यवस्था के सुधारक हो सकते है ।वरना झूठी जानकारी से नगर की सफाई व्यवस्था और चरमरा सकती है।अधिकारी शासन की नजर में अपने नंबर बढ़वाकर और इनाम लेकर मीडिया के माध्यम से खूब वाहवाही लूटेंगे । और नगर का आम नागरिक ठगा का ठगा रह जाएगा।इसलिए आपसे पुनःअनुरोध है कि नगर हित आप सवालों के जवाब स्वयं टिक करे या अपने सामने ही सही टिक करवाए। एक वर्ष में इससे पहले किसी अधिकारी ने सफाई व्यवस्था पर ध्यान नहीं दिया। अब बारी है नंबर बढ़ाने की। स्टेशन रोड पर घास सहित राउंड फब्बरा पोस्ट आफिस के पास लाखो रुपए खर्च करके बनाया गया है। महीनो से इसकी सफाई नहीं हो पा रही है।इससे इतनी बदबू आ रही ही है कि दुकानदार,ग्राहक और राहगीर सभी परेशान है और स्वच्छता सर्वेक्षण चल रहा है। औचक निरीक्षण हो रहे है। वकील श्री तिवारी लिखते हैं कि एक तरफ तो पलकमती को साबरमती बनाने के प्रयास हो रहे है। दूसरी तरफ बाजार के कुछ दुकानदार सुबह -शाम पुल के ऊपर से रोज दुकान का अपशिष्ट फेंक रहे है, विशेष तौर पर होटल, सब्जी,फल बाले और मोबाइल रिपेयरिंग वाले, नदी को मां मानने बालो से सोहागपुर नगर पूछता है।

नेशनल लोक अदालत सम्पन्न, मजदूर पेशा लक्ष्मणप्रसाद को मिली बीमा राशि

सोहागपुर। मध्य प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर एवं प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश नर्मदापुरम के निर्देशानुसार स्थानीय जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष तहसील विधिक सेवा समिति माननीय श्री अतुल सक्सेना जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष तहसील विधिक सेवा समिति के मार्गदर्शन में अधिवक्ता संघ सभा कक्ष में नेशनल लोक अदालत एवं विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण अर्पित करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर न्यायाधीश जेएमएफसी श्रीमती अपेक्षा यादव, वरिष्ठ न्यायाधीश श्री तेजसिंह, बैंक अधिकारी, नगरपालिका अधिकारी, विद्युत विभाग अधिकारी,अधिवक्ता संघ के सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन वकील संजय तिवारी ने किया। इस नेशनल लोक अदालत में प्रकरण कमांक 01 सोहागपुर के जिला न्यायाधीश अतुल सक्सेना के न्यायालय में वाहन से हुई टक्कर के एक पुराने प्रकरण में लक्ष्मण प्रसाद उर्फ सुक्कु को दो वर्ष पहले पलकमति नदी पर ट्रक ने टक्कर मार दी थी, जिसके कारण मजदूर पेशा लक्ष्मण प्रसाद को गंभीर चोट आकर उसको एक पैर गवाना पडा और उसके घर पर गंभीर अर्थिक संकट उत्पन्न हो गया। जिसमें लक्ष्मणप्रसाद के वकील जे.पी. महेश्वरी एवं बीमा कंपनी के वकील शिरीष तिवारी ने न्यायालय के समक्ष उक्त प्रकरण को वरीयता के साथ समझाईश करके प्रकरण को निराकृत करवाया। जिसमें बीमा कंपनी ने 5 लाख 50 पचास रूपये त्वरित स्वीकृत करके बुजुर्ग लक्ष्मण प्रसाद की सहायता की। न्यायालय में लक्ष्मणप्रसाद ने अभिभाषक सहित पीठासीन न्यायाधीश को आशीष वचन कहे। प्रकरण कमांक 02 सोहागपुर न्यायालय के मजिस्ट्रेट के न्यायालय में तीन वर्ष पहले ग्राम परसवाडा में रहने वालो कमलेष अहिरवार के साथ उधारी की बात को लेकर सुरेश अहिरवार ने विवाद किया था,। जिसमें सोहागपुर थाने में रिपोर्ट लिखवाई गई थी। मजिस्ट्रेट, तेजदीप सासन के निरंतर प्रयास एवं समझाईश से अंतत दोनों पक्षों के मध्य लोक अदालत में सुलह समझौता हुआ । भविष्य में कोई विवाद नहीं किये जाने का आश्वासन देकर दोनों न्यायालय के विदा हुये।

स्वच्छ सर्वेक्षण की तैयारियों को लेकर एसडीएम, सीएमओ ने किया निरीक्षण

सोहागपुर। स्वच्छ सर्वेक्षण की तैयारियों को लेकर अनुविभागीय अधिकारी एवं मुख्य नगरपालिका अधिकारी ने नगर के शास्त्री वार्ड, तिलक वार्ड, इंदिरा वार्ड आदि स्थानों का निरीक्षण किया। इस निरीक्षण के दौरान नगर की साफ सफाई

व्यवस्था को ध्यान के मद्देनजर संयुक्त निरीक्षण अनुविभागीय अधिकारी राजस्व सुश्री प्रियंका भलावी एवं मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्री धर्मेंद्र शर्मा के साथ उप स्वच्छता निरीक्षक अमित परसाई , वार्ड प्रभारी राजकुमार घारू आदि साथ थे। इस निरीक्षण के दौरान नगर के शास्त्री वार्ड, तिलक वार्ड एवं इंदिरा वार्ड एवं नगर की प्रसंस्करण इकाइयों के अंतर्गत मटेरियल रिकवरी फैसिलिटी सेंटर, वेस्ट टू कंपोस्ट प्लांट एवं फिकल स्लज ट्रीटमेंट प्लांट का निरीक्षण किया गया। इस निरीक्षण के दौरान एसडीएम ने नगर की साफ सफाई व्यवस्था को सुदृढ़ करने के निर्देश दिए एवं स्वच्छ सर्वेक्षण के दौरान ध्यान देखे जाने वाले स्थानों पर विशेष ध्यान देने की बात कही।

स्वर्गीय खंडेलवाल स्मृति क्रिकेट में पालीवाल जी टीम ने रामगंज को हराया, 11 अप्रैल को होगा फाइनल

सोहागपुर। स्व मनोज खंडेलवाल जी की स्मृति में आयोजित विधायक ट्रॉफी 3 सोहागपुर प्रीमियर लीग के 11दिन रात में क्रिकेट प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें पहला मैच रामगंज टाइगर एवं पालीवाल जी 11 के बीच खेला गया ।जिसमें रामगंज टाइगर ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 108 रन बनाए । इसके जवाब में पालीवाल जी टीम ने सात ओवरों में ही रामगंज टाइगर के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया। इस प्रतियोगिता में दीपक नामदेव को मेन ऑफ द मैच के पुरूस्कार से अतिथियों ने सम्मानित किया। दूसरा प्रतियोगिता शिवांश क्लब एवं आर पी एस जी के मध्य खेला गया। जिसमें शिवांश क्लब ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 10 ओवर में 118 बनाए। जवाबी बल्लेबाजी करते आर पी एस जी 75 रन पर सिमट गई। इस प्रतियोगिता का मेन ऑफ द मैच पुरस्कार अभिषेक को अतिथियों ने सम्मानित किया। इस अवसर पर प्रतियोगिता के अतिथि के रूप में मध्य प्रदेश लागौरी संघ सचिव आकाश अमोले आदि मंचासीन थे। वहीं स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल के सुपुत्र यश खंडेलवाल एवं

आयोजक रामप्रसाद वार्ड पार्षद आशीष विश्वकर्मा मालवीय विशेष रूप से उपस्थित थे। खेल का आंखों देखा हाल अंकित श्रोती ,पवन रघुवंशी अरबाज ने सुनाया। प्रतियोगिता की स्कोरिंग सिद्धार्थ मौर्य,विशाल मालवीय,देव पाली ने की। स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल स्मृति विधायक विजयपालसिंह ट्राफी 3 नाइट प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता 3 की अंपायरिंग परिणय मालवीय, अभिषेक ठाकुर, शिवम दुबे ,ऋषभ रघुवंशी ने की । इसके पूर्व गुरूवार को स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल जी की स्मृति में आयोजित विधायक ट्रॉफी 3 सोहागपुर प्रीमियर लीग की प्रतियोगिता में रात को तीन मैच खेले गए पहला मैच चंद्रा इंटरप्राइजेज एवं विश्वकर्मा शिवांश क्लब के बीच खेला गया। जिसमें पहले बल्लेबाजी करते हुए शिवांश क्लब ने 67 रन बनाए । इसके जवाब में चंद्रा इंटरप्राइजेज ने केवल 8 ओवर 4 बॉल में लक्ष्य पूरा कर लिया। मेन ऑफ द मैच भूरा कुमावर को प्रदान किया गया । दूसरा मैच जीपीएस 11 और रामगंज के बीच हुआ। जीपीएस 11 ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 10 ओवर में 93 रन बनाए। इसके जवाब में रामगंज टाइगर ने 5 ओवर में मैच जीत लिया। मेन ऑफ द मैच सौरभ पोलार्ड को दिया गया। तीसरा मैच रामगंज टाइगर ऑर चंद्रा इंटरप्राइजेज के मध्य हुआ ।जिसमें रामगंज ने 108 रन बनाए । इसके जवाब में चंद्रा इंटरप्राइजेज 94 रन बनाकर आउट हो गई। इस प्रतियोगिता में मेन ऑफ द मैच आयुष पटेल को पुरस्कृत किया गया। प्रतियोगिता की स्कोरिंग उत्सव जायसवाल, सूरज चौरसिया,विशाल मालवीय एवं देव पाली ने की। प्रतियोगिता की अंपायरिंग परिणय मालवीय ,अभिषेक ठाकुर, शिवम दुबे एवं हिमांशु जायसवाल ने की। आयोजक पार्षद आशीष विश्वकर्मा मालवीय ने बताया कि स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल स्मृति विधायक ट्राफी 3 प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता का फाइनल सोमवार 11 मई को होगा। समापन के अवसर पर अतिथियों मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक विजयपालसिंह के अलावा अन्य अतिथि भी उपस्थित रहेंगे।

नेशनल लोक अदालत अयोजित

बिजली, जलकर और संपत्तिकर के सरचार्ज में 100 प्रतिशत तक की छूट

● **13 हजार लंबित मामलों पर फोकस**

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में शनिवार 9 मई को इस वर्ष की दूसरी राष्ट्रीय लोक अदालत आयोजित की। आम लोगों को त्वरित और सुलभ न्याय देने के उद्देश्य से होने वाली इस लोक अदालत में बिजली बिल, जलकर और संपत्ति कर के सरचार्ज में 100 प्रतिशत तक की छूट का लाभ दिया।

इसके साथ ही संपत्ति विवाद, बैंक रिकवरी, चेक बाउंस, मोटर दुर्घटना मुआवजा, पारिवारिक और वैवाहिक विवाद सहित कई मामलों का आपसी सहमति से निपटारा कराया जा रहा है।

61 पीठों का गठन– भोपाल में भी राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन जिला न्यायालय, बैरसिया स्थित सिविल न्यायालय और श्रम न्यायालयों में एक साथ किया। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से इसके लिए कुल 61 पीठों का गठन किया गया। इन पीठों में सिविल, बैंकिंग, पारिवारिक, श्रम और अन्य लंबित मामलों की सुनवाई कर समझौते के आधार पर निराकरण किया जाएगा।

13 हजार 186 लंबित मामलों पर फोकस– बता दें कि, लोक अदालत में इस बार 13 हजार 186 लंबित मामलों को शामिल किया गया है। इसके अलावा श्रम न्यायालयों से जुड़े 233 प्रकरण और 53 अन्य मामलों का भी निपटारा किया जा रहा है। अधिकारियों के अनुसार, बैंक रिकवरी, मोटर दुर्घटना दावा, चेक बाउंस और पारिवारिक विवादों के मामलों पर विशेष फोकस रहेगा ताकि लोगों को लंबी कानूनी प्रक्रिया से राहत मिल सके।

चिंता न करें...आपसे कोई ओटीपी नहीं मांगा जाएगा

भोपाल में जनगणना अंतर्गत कई लोग प्रगणकों को नहीं दे रहे जानकारी, ठगी का डर

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में 1 मई से जनगणना की शुरुआत हो गई है। यह जनगणना का पहला चरण है। जिसमें एक महीने तक मकान और परिवार से संबंधित 33 बिंदुओं पर जानकारी पूछी जाएगी। इस काम के लिए भोपाल में ही 6 हजार से ज्यादा कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है, जो शहरी क्षेत्र के 25 जोन में काम करेंगे। जनगणना के बीच प्रगणकों को कई परेशानियों का सामना भी करना पड़ रहा है। कई लोग प्रगणकों को जनगणना से जुड़ी जानकारी नहीं दे रहे हैं। सामने आया है कि ओटीपी (वन टाइम पॉसवर्ड) से लोगों को ठगी का डर भी है। वहीं, किराएदारों की जानकारी देने पर वे इनकम टैक्स के दायरे में आ सकते हैं? हालांकि, प्रगणक शहरवासियों को समझा रहे हैं कि ऐसा कुछ नहीं है।इसे लेकर नगर निगम की कमिश्नर संस्कृति जैन ने तस्वीर भी साफ की है। उन्होंने बताया कि जनगणना देश का बहुत बड़ा महाअभियान है, जो लोगों के सहयोग के बिना नहीं कर सकते। प्रगणक यदि आपके घर आ रहे हैं, उन्हें सही जवाब दें। प्रश्न बहुत आसान है। चिंता न करें, कोई ओटीपी नहीं लिया जा रहा है। हां, मोबाइल नंबर जरूर मांगा जा रहा है। ताकि एसएमएस के जरिए ही गणना की जानकारी मिल सके। जनगणना को लेकर प्रगणकों की हर रोज बैठकें भी ले रहे हैं।

● **पहले चरण में 33 बिंदुओं पर ले रहे जानकारी–** मकान नंबर, छत–दीवार कैसी है ?, मकान की वर्तमान स्थिति, उसका पयोग, घर में रहने वाले लोगों की संख्या, परिवार के मुखिया का नाम, उसका लिंग, पेजयल का मुख्य स्रोत, शौचालय का प्रकार, गंदे पानी की निकासयी, पीएनजी कनेक्शन की उपलब्धता, प्रकाश का मुख्य स्रोत, रेडियो या ट्रांजिस्टर, टेलीविजन, इंटरनेट सुविधा है या नहीं, टेलीफोन, साइकिल, स्कूटर, बाइक या मोपेड, कार, जीप या वैन, मोबाइल नंबर समेत 33 बिंदुओं की जानकारी ली जाएगी।

भोपाल बैरसिया में टाइगर का मूवमेंट... दहशत में 7 गांव

10 दिन में 5 गाय और भैंस का किया शिकार; लोगों ने रात में रास्ता बदला

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बैरसिया रोड पर टाइगर के मूवमेंट से 7 गांवों के लोग दहशत में हैं। पिछले 10 दिनों में टाइगर 5 गाय और भैंसों का शिकार कर चुका है। इस वजह से लोगों ने रात में रास्ता बदल लिया है। वे 5 से 6 किलोमीटर घूमकर आना-जाना कर रहे हैं।

कनेरा गांव और उससे जुड़े करोंदखुर्द, कड़ैया, छापर, अगरिया,

मुगालिया कोट और चांचड़ में टाइगर का मूवमेंट देखा गया है। जिला पंचायत उपाध्यक्ष मोहन सिंह जाट ने बताया कि हलाली नदी के किनारे टाइगर का मूवमेंट लगातार नजर आ रहा है।करीब 10 दिन पहले कनेरा में सबसे पहले टाइगर दिखाई दिया था। वहीं, गुरुवार-शुक्रवार की रात उसने एक और गाय का शिकार कर लिया।

रात में शिकार कर रहा टाइगर

ग्रामीणों ने बताया कि टाइगर रात में ही शिकार कर रहा है। इस वजह से किसानों ने रात में खेतों में जाना बंद कर दिया है। जिला पंचायत उपाध्यक्ष मोहन सिंह जाट ने बताया कि कई लोगों ने रास्ता बदल लिया है। वे 5 से 6 किमी घूमकर आना-जाना कर रहे हैं, ताकि उनका बाघ से सामना न हो।

वन विभाग को सूचना दी, पर पता नहीं चला

ग्रामीणों ने टाइगर के मूवमेंट की सूचना वन विभाग को भी दी है। वन विभाग की टीम ने सर्चिंग की, लेकिन टाइगर का पता नहीं चल सका। ग्रामीणों का कहना है कि टाइगर पहाड़ी और नदी किनारे के रास्तों से गांव तक पहुंच रहा है। वह खलिहानों और गांव के बाहर बने घरों में बंधे मवेशियों को अपना शिकार बना रहा है।

सबके साझा प्रयासों से होगा भारत का निर्माण : हरिवंश

भोपाल। भारत भवन में चल रहे राष्ट्रीय संविमर्श 'प्रणाम उदन्त मार्तण्ड' में राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश ने कहा कि हमने 2014 के बाद यह सपना तय किया है कि 2047 में हम कहाँ पहुंचेंगे? जबकि हमारे पड़ोसी देशों ने इस तरह के लक्ष्य और योजनाएं पहले ही बनाई हुई हैं। अपने देश के विकास का रोडमैप बनाने में हम 66 साल पिछड़ गए। हम सब लोगों के साझा प्रयासों से नए भारत का निर्माण होगा, इसमें मीडिया भी शामिल है। बदलते दौर में, नई तकनीक के साथ हम सबको अपने आपको प्रासंगिक बनाना होगा। इस समय भारत में बहुत अच्छा काम हो रहा है। पिछले 10-12 वर्षों में भारत में तेजी से आधारभूत संरचनाएं विकसित हुई हैं। उल्लेखनीय है कि माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय और वीर भारत न्यास की संयुक्त पहल पर भारत भवन, भोपाल में आयोजित 'प्रणाम उदन्त मार्त्तण्ड' में बतौर मुख्य वक्ता शामिल हुए। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार उदय सिन्हा, विकास मिश्र, प्रत्यूष रंजन और सईद अंसारी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र का संचालन वरिष्ठ पत्रकार गिरीश उपाध्याय ने किया।

'नए भारत का निर्माण और हम भारत के लोग' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए हरिवंश ने कहा कि चाणक्य के अनुसार, अर्थ व्यवस्था सुदृढ़ नहीं है तो आपको कोई नहीं पूछेगा। इसी प्रकार स्वामी विवेकानंद ने भी कहा कि भारत को युवा संन्यासियों से अधिक युवा उद्यमियों की आवश्यकता है। महात्मा गांधी भी भारत को आत्मनिर्भर बनाने की बात करते थे। उपसभापति हरिवंश ने कहा कि उदन्त मार्त्तण्ड के शीर्षक के नीचे एक श्लोक प्रकाशित होता था, उसका आशय था- सूर्य के प्रकाश के बिना जैसे अंधकार नहीं मिटता, उसी प्रकार जो लोग नहीं जानते, उनको समाचारपत्र के बिना जानकारी नहीं मिल सकती। यह श्लोक समाचार पत्र की भूमिका को स्पष्ट करता है। हम कह सकते हैं कि सूचना की ताकत को वर्षों पहले पहचान लिया गया था।

वरिष्ठ पत्रकार विकास मिश्र ने कहा कि हमें नागरिक अनुशासन का पालन करना चाहिए। कितने ही लोग हैं जो बिना हेलमेट वाहन चलाते हैं? सरकार की अच्छी योजनाओं का दुरुपयोग करते हैं। भारत के निर्माण में हमें नियमों और अनुशासन का पालन करना चाहिए। वहीं, वरिष्ठ पत्रकार प्रत्यूष रंजन ने एआई की उपयोगिता पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि हम इस तकनीक से बच नहीं सकते इसलिए हमें एआई को अच्छी प्रकार समझना चाहिए। टीवी पत्रकार सईद अंसारी ने कहा कि आज पत्रकार नोट्स बनाना भूल गए हैं। अच्छा पत्रकार बनने के लिए विद्यार्थियों से आग्रह करता हूँ कि नोट्स बनाने सीखें। उन्होंने कहा कि आज पत्रकारिता की साख पर बहुत बड़ा संकट है। इसकी साख को बचाकर रखना बहुत जरूरी है।

वरिष्ठ पत्रकार उदय कुमार ने कहा कि विदेश में नागरिकों में सिविक सेंस दिखाई देता है। वहां के लोग अपने कर्तव्यों का स्वाभाविक ही पालन करते हैं। अगर हमें अपने देश को बनाना है तो कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। अपनी मातृभाषा को सीखना चाहिए और उस पर गौरव की अनुभूति करनी चाहिए।

पत्रकारिता में विचार महत्वपूर्ण, भाषा केवल माध्यम – 'भारतीय पत्रकारिता के वैचारिक अधिष्ठान' पर विमर्श करते हुए वरिष्ठ पत्रकारों एवं विचारकों ने कहा कि स्वबोध से ही भारत बोध हो सकता है। हमारी पत्रकारिता के वैचारिक अधिष्ठान- स्वत्व, स्वाभिमान, भारत बोध, राष्ट्र निर्माण, लोक जागरण और अभिव्यक्ति की शक्ति पर केंद्रित होना चाहिए। वरिष्ठ पत्रकार प्रफुल्ल केतकर ने कहा कि पत्रकारिता में विचार महत्वपूर्ण है, भाषा तो केवल माध्यम है। पत्रकारिता-पत्रकारिता है, हिंदी या अंग्रेजी की पत्रकारिता नहीं।

वरिष्ठ पत्रकार विष्णु प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि हमें वर्षों तक उन लोगों ने यह सिखाया कि पत्रकारिता निष्पक्ष होती है, जो जीवन भर पक्षपात करते रहे। पत्रकार को देश-समाज के प्रति पक्षपाती होना ही चाहिए। संवादी होने के कारण हम देश, समाज और प्रकृति के प्रति समर्पित हैं।

वहीं, पुदुचेरी विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. सी. जयशंकर बाबू ने कहा कि पत्रकारिता सेवा है और सेवा धर्म है। भारत की पत्रकारिता स्वाधीनता की चेतना के साथ शुरू हुई है। यदि यह स्व का बोध नहीं होता तो पत्रकारिता शुरू ही नहीं होती। पश्चिम बंगाल से आई साहित्यकार प्रो. सोमा बंद्योपाध्याय ने कहा कि बंगाली होने के बाद भी मैंने भारत को भारत के रूप में जाना है। बंगाली अस्मिता या अन्य भाषायी अस्मिता की बात जो उठाते हैं, उससे झूठी बात कुछ नहीं।

‘3 इडियट्स’ से ‘4 इडियट्स’ तक

दोस्ती, सपनों और सिस्टम से टकराव का सफर

भारतीय सिनेमा की सबसे लोकप्रिय फिल्मों में शामिल ‘3 इडियट्स’ का सीक्वल अब लगभग तय माना जा रहा है। लंबे समय से चल रही चर्चाओं पर विराम लगाते हुए आमिर खान ने खुद स्वीकार किया है कि निर्देशक राजकुमार हिरानी उन्हें कहानी सुना चुके हैं और फिल्म की दिशा पर गंभीरता से काम चल रहा है। यह कहानी पहली फिल्म के करीब 10 से 15 साल बाद की दुनिया दिखाएगी, जहां रैंचो, फरहान और राजू अब जिंदगी के नए मोड़ पर होंगे।

2009 में रिलीज हुई ‘3 इडियट्स’ केवल एक मनोरंजक फिल्म नहीं थी, बल्कि उसने भारतीय शिक्षा व्यवस्था, पैरेंटल प्रेशर और करियर की अंधी दौड़ पर बड़ा सवाल खड़ा किया था। ‘ऑल इज़ वेल’ जैसी लाइन आज भी युवाओं की जिंदगी का हिस्सा है। यही वजह है कि जब सीक्वल की खबर सामने आई तो सोशल मीडिया पर उत्साह के साथ-साथ उम्मीदें भी बढ़ गईं। इस बार फिल्म को अनौपचारिक तौर पर ‘4 इडियट्स’ कहा जा रहा है, क्योंकि कहानी में एक नए किरदार की एंट्री होने की चर्चा तेज है।

इस बार कहानी सिर्फ कॉलेज लाइफ तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि आधुनिक दौर की डिजिटल शिक्षा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन जैसी होती जा रही जिंदगी पर केंद्रित होगी। जहां पहली फिल्म ‘मार्क्स बनाम टैलेंट’ की लड़ाई दिखाती थी, वहीं नया पार्ट ‘इंसान बनाम एल्गोरिद्म’ जैसी बहस को छू सकता है। माना जा रहा है कि हिरानी और लेखक अभिजीत जोशी इस बार शिक्षा व्यवस्था में बढ़ती तकनीकी निर्भरता और मानसिक दबाव को व्यंग्य और भावनाओं के साथ पेश करेंगे।

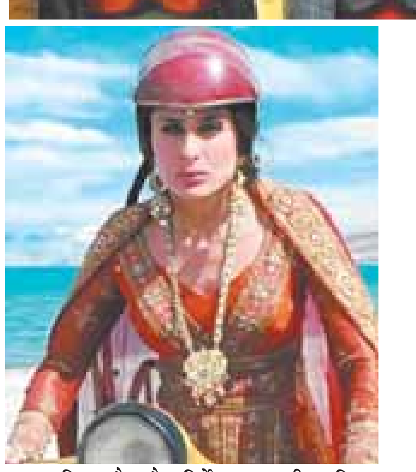

फिल्म की सबसे बड़ी खासियत इसकी स्टारकास्ट मानी जा रही है। आर माधवन और शरमन जोशी की वापसी को लेकर अभी आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है, लेकिन इंडस्ट्री में यह लगभग तय माना जा रहा है कि मूल तिकड़ी फिर साथ दिखाई दे सकती है। आमिर खान एक बार फिर रैंचो उर्फ फुंसुख वांगडू के किरदार में नज़र आ सकते हैं। वहीं फरहान अब एक सफल वन्यजीव फोटोग्राफर और राजू एक जिम्मेदार पारिवारिक व्यक्ति के रूप में दिख सकते हैं। कहानी में यह भी दिखाया जा सकता है कि उम्र और सफलता के बाद भी इंसान की असली लड़ाई भीतर की बेचैनी से खत्म नहीं होती।

सीक्वल में सबसे ज्यादा चर्चा जिस नाम की हो रही है, वह हैं विक्की कौशल। हिरानी उन्हें ‘चौथे इडियट’ के रूप में पेश करना चाहते हैं। विकी ने ‘संजू’ और ‘डंकी’ में हिरानी के साथ काम किया है और निर्देशक उनकी अभिनय क्षमता से बेहद प्रभावित बताए जाते हैं। आमिर, हिरानी और विक्की के बीच कई दौर की मीटिंग भी हो चुकी हैं। यदि सब कुछ तय रहा, तो विकी का किरदार नई पीढ़ी की सोच और संघर्ष का प्रतिनिधित्व करेगा।

फिल्म से जुड़े लोगों का मानना है कि ‘4 इडियट्स’ केवल पुरानी यादों का सहारा लेकर आगे नहीं बढ़ेगी। बल्कि यह आज के युवाओं की वास्तविक परेशानियों को सामने लाएगी। आज छात्र सिर्फ परीक्षा के दबाव से नहीं, बल्कि सोशल मीडिया तुलना, एआई आधारित प्रतिस्पर्धा, करियर असुरक्षा और मानसिक स्वास्थ्य जैसी समस्याओं से भी जूझ रहे हैं। ऐसे में हिरानी की शैली में बनी यह फिल्म एक बार फिर मनोरंजन के साथ सामाजिक संदेश देने की कोशिश कर सकती है।

दिलचस्प बात यह भी है कि दर्शकों के बीच फिल्म को लेकर मिश्रित प्रतिक्रिया देखने को मिल रही हैं। जहां बड़ी संख्या में लोग पुराने किरदारों को फिर साथ देखने के लिए उत्साहित हैं, वहीं कुछ दर्शकों का मानना है कि ‘3 इडियट्स’ जैसी क्लासिक फिल्म को छेड़ना जोखिम भरा हो सकता है। सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर इस विषय पर लगातार बहस चल रही है। फिल्म की शूटिंग 2026 के अंत या 2027 की शुरुआत में शुरू होने की संभावना जताई जा रही है। हालांकि मेकर्स की ओर से अभी तक आधिकारिक रिलीज डेट सामने नहीं आई है।

बताया जा रहा है कि स्क्रिप्ट पर अभी भी काम जारी है और हिरानी इसे जल्दबाजी में नहीं बनाना चाहते। आमिर खान ने भी संकेत दिया है कि कहानी में वही पुराना हास्य, भावनात्मक गहराई और सामाजिक व्यंग्य मौजूद रहेगा जिसने पहली फिल्म को यादगार बनाया था। अगर सब कुछ योजना के मुताबिक आगे बढ़ा, तो ‘4 इडियट्स’ सिर्फ एक सीक्वल नहीं, बल्कि दो पीढ़ियों के बीच बदलते सपनों और संघर्षों का सिनेमाई पुल साबित हो सकती है। ‘ऑल इज़ वेल’ की गूंज एक बार फिर सिनेमाघरों में सुनाई देने की पूरी तैयारी में है।

जूनियर एनटीआर की नई फिल्म में बढ़ा रोमांच

पिछला साल जूनियर एनटीआर के लिए उम्मीदों के मुताबिक नहीं रहा। हिंदी सिनेमा में उनकी बड़ी शुरुआत मानी जा रही ‘वॉर 2’ को लेकर जिस तरह का माहौल बनाया गया था, वैसा असर दर्शकों पर दिखाई नहीं दिया। खासतौर पर उन्हें खलनायक की भूमिका में देखने को लेकर दर्शकों के बीच मिली-जुली प्रतिक्रिया सामने आई। कई लोगों को लगा कि इतने बड़े सितारे को नकारात्मक किरदार में पेश करना जोखिम भरा फैसला था।

इसी बीच उनकी दूसरी बड़ी फिल्म ‘देवरा’ भी उम्मीदों के अनुसार कमाई नहीं कर सकी। फिल्म को लेकर शुरुआत में जबरदस्त चर्चा थी, लेकिन प्रदर्शन वैसा नहीं रहा जैसा निर्माताओं ने सोचा था। अब इसके दूसरे भाग को लेकर भी स्थिति पूरी तरह साफ नहीं मानी जा रही। प्रशंसक लगातार यह जानना चाहते हैं कि फिल्म का अगला हिस्सा आखिर कब शुरू होगा। इन सबके बीच जूनियर एनटीआर ने अपना पूरा ध्यान अपनी अगली बड़ी फिल्म ‘ड्रैगन’ पर लगा दिया है। इस फिल्म का निर्देशन प्रशांत नील कर रहे हैं, जो इससे पहले कई बड़ी एक्शन फिल्मों के जरिए अपनी अलग पहचान बना चुके हैं। बताया जा रहा है कि यह फिल्म बड़े स्तर पर तैयार की जा रही है और इसमें जबरदस्त एक्शन, भावनात्मक संघर्ष और दमदार किरदार देखने को मिलेंगे। निर्माताओं ने हाल ही में फिल्म की रिलीज तारीख का भी ऐलान किया। यह फिल्म 11 जून 2027 को दुनियाभर के सिनेमाघरों में प्रदर्शित होगी। इस घोषणा के बाद से ही दर्शकों के बीच उत्सुकता और बढ़ गई है।

रियल बॉक्स

अब छुपकर नहीं देखी जाती ‘A’ फ़िल्में

हेमंत पाल

लेखक ‘सुबह सवेरे’ इंदौर के स्थानीय संपादक है।

फिल्म कई तरह की होती है। उन्हीं में से सामाजिक यानी सभी के देखने योग्य और ‘ए’ सर्टिफ़िकेट वाली फ़िल्में भी हैं, जिसके दर्शकों का एक अलग वर्ग होता है। फिल्म उद्योग में लंबे समय तक ‘ए’ श्रेणी की फिल्मों को लेकर एक अलग ही धारणा बनी रही। इन्हें मुख्यधारा से अलग, सीमित और अक्सर विवादास्पद माना जाता था। ‘ए’ सर्टिफिकेट का मतलब आमतौर पर अश्लीलता, अत्यधिक हिंसा या ऐसे विषयों से लगाया जाता था, जिन्हें समाज सहज रूप से स्वीकार नहीं करता था। यही कारण था कि इन फिल्मों का दर्शक वर्ग सीमित रह जाता था। परिवार के साथ फिल्म देखने की भारतीय परंपरा ने भी इस दूरी को और बढ़ाया। ऐसे में जो लोग इन फिल्मों में रुचि रखते थे, वे भी अक्सर इसे सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं करते थे। सिनेमाघरों में इन फिल्मों के शो कम होते थे और इनकी कमाई भी अपेक्षाकृत सीमित रहती थी। किंतु, यह तस्वीर धीरे-धीरे बदलने लगी। समाज के बदलते स्वरूप, डिजिटल युग के विस्तार और वैश्विक कंटेंट की पहुंच ने दर्शकों की सोच को व्यापक बनाया। अब दर्शक केवल हल्के-फुल्के मनोरंजन तक सीमित नहीं रहना चाहते, बल्कि वे ऐसी कहानियों की तलाश में हैं जो उन्हें झकझोरें, सोचने पर मजबूर करें और वास्तविकता के करीब हो। यही वह मोड़ था जहां ‘ए’ सर्टिफिकेट फिल्मों ने अपनी नई पहचान बनानी शुरू की।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो भारतीय सिनेमा में वयस्क फिल्मों का एक लंबा और उतार-चढ़ाव भरा सफर रहा है। सत्तर और अस्सी के दशक में ‘ए’ रेटिंग वाली फिल्मों को अक्सर सामाजिक रूप से हेय दृष्टि से देखा जाता था। उस दौर में हिंसा या बोल्ड दृश्यों वाली फिल्मों को केवल एक विशेष वर्ग के दर्शकों तक सीमित माना जाता था। राज कपूर की ‘सत्यम शिवम सुंदरम’ जैसी फिल्मों ने जब कलात्मकता और वयस्क सामग्री के बीच की रेखा को छुआ, तो उन्हें लेकर काफी विवाद हुए। हालांकि, नब्बे के दशक के उत्तरार्ध और नई सहस्राब्दी की शुरुआत में ‘मर्डर’ और ‘जिस्म’ जैसी फिल्मों ने वयस्क श्रेणी में भी व्यावसायिक संभावनाओं के द्वार खोले। फिर भी, वे फिल्में आज के दौर की तुलना में एक छोटे दायरे में सिमटी हुई थीं। उस समय का दर्शक वर्ग डिजिटल क्रांति से अछूता था और सिनेमाघरों में ऐसी फिल्में देखने जाना एक प्रकार की हिचक पैदा करता था। लेकिन, समकालीन समय में सूचना तकनीक के विस्तार और वैश्विक सिनेमा तक आसान पहुंच ने भारतीय दर्शकों की परिपक्वता के स्तर को बढ़ाया है, जिसका सीधा असर अब बॉक्स ऑफिस के आंकड़ों पर दिखाई दे रहा है।

इस बदलाव की एक महत्वपूर्ण कड़ी ‘उड़ता पंजाब’ साबित हुई। नशे की समस्या जैसे गंभीर और असहज विषय को जिस ईमानदारी से इस फिल्म में दिखाया गया, उसने दर्शकों को यह एहसास कराया कि सिनेमा केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि समाज का आईना भी हो सकता है। सेंसर बोर्ड से ‘ए’ सर्टिफिकेट मिलने के बावजूद फिल्म को सराहना और व्यावसायिक सफलता दोनों मिलीं। इसके बाद धीरे-धीरे बड़े सितारों ने भी इस दिशा में कदम बढ़ाया। ‘कबीर सिंह’ इसका एक प्रमुख उदाहरण है। यह फिल्म अपने किरदारों की जटिलता और विवादास्पद व्यवहार के कारण चर्चा में रही। इसके बावजूद दर्शकों ने इसे बड़े पैमाने पर स्वीकार किया। इस फिल्म की सफलता ने यह स्पष्ट कर दिया कि ‘ए’ सर्टिफिकेट अब दर्शकों को सिनेमाघरों तक आने से नहीं रोकता, बल्कि अगर कहानी में दम हो, तो वह हर बाधा को पार कर सकती है। यह बदलाव अपने चरम पर तब पहुंचा, जब ‘एनिमल’ जैसी फिल्में सामने आईं। इस फिल्म ने हिंसा, मनोवैज्ञानिक जटिलताओं और रिश्तों के अंधेरे पहलुओं को बेहद तीव्र और अनगढ़ रूप में प्रस्तुत किया। पारंपरिक सिनेमा से हटकर इसकी शैली और कथानक ने दर्शकों को एक अलग अनुभव दिया। आलोचनाओं और विवादों के बावजूद फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर अभूतपूर्व सफलता हासिल की। यह इस बात का स्पष्ट संकेत था कि आज का दर्शक जोखिम लेने वाले सिनेमा को भी पूरी तरह स्वीकार कर रहा है।

इस क्रम में ‘द केरल स्टोरी’ और ‘द कश्मीर फाइल्स’ जैसी फिल्मों ने यह साबित किया कि संवेदनशील और विवादास्पद विषय भी दर्शकों को आकर्षित करते हैं। इन फिल्मों ने समाज और इतिहास के ऐसे पहलुओं को सामने रखा, जिन पर अक्सर खुलकर चर्चा नहीं होती थी। दर्शकों ने न केवल इन फिल्मों को देखा, बल्कि इनके साथ भावनात्मक रूप से भी जुड़ाव महसूस किया। इनकी बॉक्स ऑफिस सफलता इस बात का प्रमाण है कि अब दर्शक कठिन और असहज विषयों से दूर नहीं भागते। दर्शक अब फिल्मों में केवल मनोरंजन ही नहीं, बल्कि सच्चाई, गहराई और विविधता भी चाहता है। यही कारण है कि ‘ए’ सर्टिफिकेट फिल्में अब एक नए आत्मविश्वास के साथ बनाई जा रही हैं। ‘ओएमजी 2’ इस बदलाव का एक अलग और सकारात्मक उदाहरण है। यह फिल्म न तो अत्यधिक हिंसक थी और न पारंपरिक अर्थों में ‘बोल्ड’, लेकिन इसके विषय की संवेदनशीलता के कारण इसे ‘ए’ सर्टिफिकेट मिला। इसके बावजूद फिल्म ने दर्शकों के बीच अच्छी पकड़ बनाई और व्यावसायिक रूप से सफल रही। इसने यह साबित किया कि ‘ए’ सर्टिफिकेट केवल एक सीमा नहीं, बल्कि एक अवसर भी हो सकता है, ऐसे विषयों को प्रस्तुत करने का, जो समाज के लिए महत्वपूर्ण हैं।

हाल के सालों में ‘धुरंधर 2’ जैसी फिल्मों ने तो इस धारणा को पूरी तरह बदल दिया कि ‘ए’ सर्टिफिकेट फिल्में केवल सीमित कमाई कर सकती हैं। इस तरह की फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर नए रिकॉर्ड स्थापित किए हैं और यह दिखाया कि यदि कंटेंट मजबूत हो, तो दर्शक हर तरह की फिल्म को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। अब यह श्रेणी केवल प्रयोगात्मक या सीमित नहीं रह गई, बल्कि मुख्यधारा का हिस्सा बन चुकी है। हालांकि, यह बदलाव अचानक नहीं आया। इसके बीज पहले ही बोए जा चुके थे। ‘सत्या’ और ‘गैंग्स ऑफ वासेपुर’ जैसी फिल्मों ने अपने समय में ही यह संकेत दे दिया था कि दर्शक मजबूत कहानी और यथार्थवादी प्रस्तुति को पसंद करते हैं, भले ही वह ‘ए’ सर्टिफिकेट के साथ क्यों न आए। इन फिल्मों ने आने वाली पीढ़ी के फिल्मकारों को यह भरोसा दिया कि वे बिना किसी समझौते के अपनी कहानियां कह सकते हैं। आज की स्थिति यह है कि दर्शक अब ‘ए’ सर्टिफिकेट को किसी नकारात्मक नजरिए से नहीं देखते। पहले जहां लोग ऐसी फिल्मों को छुपकर देखते थे, वहीं अब वे खुलकर सिनेमाघरों में जाकर इन्हें देखते हैं, इन पर चर्चा करते हैं और सोशल मीडिया पर अपनी राय भी साझा करते हैं। यह बदलाव केवल देखने के तरीके में नहीं, बल्कि सोच और स्वीकृति में आया है।

वयस्क श्रेणी की सफलता का शिखर तब देखने को मिला, जब रणबीर कपूर की फिल्म ‘एनिमल’ परदे पर उतरी। इस फिल्म ने हिंसक चित्रण और विवादास्पद संवादों के कारण खूब सुर्खियां बटोरीं। पूर्णतः वयस्क सामग्री होने के बाद भी ‘एनिमल’ ने बॉक्स ऑफिस पर सुनामी ला दी। 917.82 करोड़ की कमाई का विश्वव्यापी संग्रह यह बताने के लिए पर्याप्त है, कि आज का सिनेमाई बाजार कितना विशाल हो गया। संदीप रेड्डी वांगा ने इस फिल्म के माध्यम से साबित किया कि एक निर्देशक अपनी दृष्टि को बिना किसी काट-छांट के पेश कर सकता है और दर्शक उसे हाथों-हाथ लेंगे। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए ‘धुरंधर’ और उसकी अगली कड़ी ‘धुरंधर 2’ ने तो कमाई के सारे पुराने रिकॉर्ड ही ध्वस्त कर दिए। ‘धुरंधर’ ने जहां करीब 1,500 करोड़ रुपए का कारोबार किया था, वहीं ‘धुरंधर 2’ ने रिलीज के महज एक महीने के भीतर 1,737.74 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया। ये आंकड़े बताते है, कि वयस्क फिल्में अब केवल एक वर्ग विशेष की पसंद नहीं रह गई, बल्कि वे व्यापक जनसमूह तक अपनी पहुंच बना चुकी हैं।

‘ए’ श्रेणी की फिल्मों ने अपने दम पर यह साबित कर दिया कि यदि कहानी सशक्त हो, तो वह हर बाधा को पार कर सकती है। एनिमल, द केरल स्टोरी, ओएमजी 2 और ‘धुरंधर 2’ जैसी फिल्मों की सफलता इस परिवर्तन का जीवंत प्रमाण है। आने वाले समय में यह प्रवृत्ति और मजबूत होने की संभावना है। दर्शक अब केवल मनोरंजन ही नहीं, बल्कि विचार और अनुभव भी चाहते हैं। ऐसे में ‘ए’ श्रेणी की फिल्में भारतीय सिनेमा को नई दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेंगी। यह कहा जा सकता है, कि ‘ए’ सर्टिफिकेट फिल्मों का यह उभार भारतीय सिनेमा के परिपक्व होने का संकेत है। अब फिल्म की सफलता उसके सर्टिफिकेट से नहीं, बल्कि उसकी कहानी, प्रस्तुति और भावनात्मक प्रभाव से तय होती है। दर्शक अब केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि अनुभव और विचार भी चाहते हैं। ऐसे में ‘ए’ श्रेणी की फिल्में सिनेमा को एक नई दिशा दे रही हैं, जहां सीमाएं टूट रही हैं और कहानियां अपने सबसे सच्चे रूप में सामने आ रही हैं। आने वाले समय में यह प्रवृत्ति और मजबूत होगी, और संभव है कि ‘ए’ सर्टिफिकेट की परिभाषा पूरी तरह बदल जाए, एक ऐसी पहचान के रूप में, जो साहस, सच्चाई और रचनात्मक स्वतंत्रता का प्रतीक हो।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

फिल्मों में भी भुनाया जाता है ‘डर’

अशोक जोशी

चंद फिल्म निर्माता डरावनी फिल्में बनाकर बरसों से बॉक्स ऑफिस के जरिए अपनी झोलियां भरते रहे है। दर्शकों में एक बड़ा वर्ग भी ऐसा है, जिसे डरावनी फिल्में देखने में मजा आता है। वह अपनी जेब का पैसा खर्च

कर सिनेमा हॉल में सिर्फ डर का मनोरंजन करने जाता है। दरअसल, डरावनी फिल्में हमारे दिमाग के भय केंद्र को सक्रिय करती हैं, जिससे हृदय गति बढ़ती है और तनावपूर्ण स्थितियों का सामना करने का रोमांच महसूस होता है। यह प्रक्रिया दिमाग में डोपामाइन जैसे अच्छा अनुभव देने वाले रसायन छोड़ती है, जो एक तरह का संतोष प्रदान करता है।

देखा जाए तो सिनेमा में डर एक अत्यंत शक्तिशाली और महत्वपूर्ण भावना है। यह भावना न केवल दर्शकों का मनोरंजन करती है, बल्कि गहरा मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी छोड़ती है। फिल्मों में डर के विभिन्न रूप और भूमिकाएं होती हैं। मनोरंजन और रोमांस का मिश्रण। दर्शक सिनेमाघरों में अपने आपको सुरक्षित महसूस करते हुए डर का अनुभव करना पसंद करते हैं। यह डर उन्हें एक एड्रेनालाईन रश देता है, जिससे रोमांस और मनोरंजन का अनुभव होता है। डरावनी पृष्ठभूमि पर बनी फिल्में अक्सर मानव जीवन के डरो, चिंताओं और अहंकार को दर्शाती हैं और उनसे पार पाने की सीख देती हैं।

डर कोई सकारात्मक भावना नहीं है। बिस्तर पर लेटे-लेटे दो गज जमीन के नीचे या बंद दरवाजा देखते हुए, चारों ओर अंधेरा छाने पर कांपना कोई सुखद एहसास नहीं है। तो फिर, डरावनी फिल्मों में ऐसा क्या है जो इंसानों को इतना आकर्षित करता है? इसके अलावा, हममें से कुछ लोग अपनी मेहनत की कमाई को डर पर खर्च करने को तैयार क्यों रहते हैं, जबकि दूसरे इससे बचने के लिए हर संभव कोशिश करते हैं? डरावनी फिल्में हमारे दिमाग के भय केंद्र को सक्रिय करती हैं, जिससे हृदय गति बढ़ती है और तनावपूर्ण स्थितियों का सामना करने का रोमांच महसूस होता है। यह प्रक्रिया दिमाग में डोपामाइन जैसे अच्छा अनुभव देने वाले रसायन छोड़ती है, जो एक तरह का संतोष प्रदान करता है।

कुछ लोगों का मानना है कि डरावनी फिल्में समाज और संस्कृति का प्रतिबिंब होती है। हॉरर फिल्में समाज के बदलते डरों और तनावों को

उजागर करती हैं। ये फिल्में सामाजिक बुराइयों और अनिश्चितताओं के बारे में जागरूकता बढ़ाने का एक साधन भी हैं तथा खलनायक की नई परिभाषा रचने जैसा काम भी करती है। 1993 में आई फिल्म ‘डर’ जैसी फिल्में बॉलीवुड में खलनायकी के चित्रण को बदलकर मनोवैज्ञानिक थ्रिलर का एक नया

आयाम लाई, जहां नायक और खलनायक के बीच की रेखा धुंधली हो जाती है।

बहुत से दर्शकों को भूतिया फिल्में देखना को पसंद होता है। हॉरर फिल्मों को देखकर ज्यादातर लोगों का गला सूख जाता है, हाथ-पांव फूल जाते हैं, कई बार तो बेहोशी तक आने लगती है। कमजोर दिल वालों की धड़कने तो इतनी ज्यादा बढ़ जाती है कि शरीर पसीना छोड़ देता है। डरावने सीन आते ही थर-थर कांपने लगते हैं बावजूद इसके वह कुर्सी से चिपके रहना पसंद करते हैं। आखिर डरावनी फिल्में देखकर डर क्यों लगता है? यह सिर्फ दिमाग का वहम है या फिर इसका कोई वैज्ञानिक कारण भी है।

लगने का कारण एड्रीनलीन हार्मोन होता है। ये हॉर्मोन तभी एक्टिव होता है, जब आपका दिल जोर-जोर से धड़कने लगता है या फिर आप तनाव में होते हैं.। ये हार्मोन शरीर के खतरे से बचने के लिए तैयार करने की एक महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया का ही हिस्सा होता है। एड्रीनलीन ग्रंथियों को पिट्यूटरी ग्रंथि नियंत्रित करती है। ये ग्रंथियां दो हिस्सों में बंटी होती हैं। बाहरी ग्रंथियां और आंतरिक ग्रंथियां। ये आंतरिक ग्रंथियां ही एड्रीनलीन हार्मोन छोडती है। जब हमारा शरीर किसी संकट में होता है या अंदर से डरता है तो यह हार्मोन निकलने लगता है। यह दिल को उत्तेजित करके ज्यादा मेहनत करने को कहता है। इससे मांसपेशियों में रक्त संचार बढ़ता है और किसी भी समस्या से शरीर को लड़ने के लिए तैयार करता है. इसके साथ ही दिमाग को भी अलर्ट करने का काम करता है।

यही कारण है कि जब हम किसी तनाव में या भूतिया फिल्म देखते समय डर महसूस करते हैं तब शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और दिल तेजी से धड़कने लगता है. इसी वजह से मुंह भी सूख जाता है. ऐसी सभी चीजों से बचकर निकलने में एड्रीनलीन हार्मोन मददगार होता है। फिल्मों में डर पैदा करने में लिंग और उम्र भी मायने रखते हैं। औसतन, युवा लोग इस डरावनी शैली की ओर अधिक आकर्षित होते हैं। पुरुषों में महिलाओं की तुलना में हॉरर फिल्मों के प्रति आकर्षण अधिक होता है। महिलाओं और पुरुषों को हॉरर अनुभव के अलग-अलग पहलू पसंद आ सकते हैं। महिलाओं को हॉरर फिल्म का सुखद अंत अधिक पसंद आ सकता है, जबकि पुरुषों को हॉरर फिल्म तब अधिक पसंद आ सकती है जब उसमें बेहद डरावने दृश्य हों।

ओटन लगे कपास... !

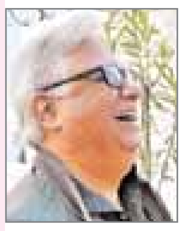

बाखबर

प्रकाश पुरोहित

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

उन दिनों आने-जाने के लिए सिर्फ राज्य परिवहन निगम (रापनि) की रंग बदलती 'बस' ही हुआ करती थी। संविद सरकार में बस का रंग लाल था, जो बाद में हरा, नीला और बादामी हो गया और बाद में भाजपा सरकार आई तो रापनि बंद हो गया और ज्यादातर नेताओं, गुंडों, दादाओं और अधिकारियों की बस चलने लगी। मध्यप्रदेश राज्य परिवहन निगम की इक्का-दुक्का, नकली बस आज भी नजर आ जाती हैं, लेकिन बोलबाला प्राइवेट-बस का ही है।

उस दौर में बारात भी ये सरकारी बस ही ढोती थी। पहले से बुकिंग करनी होती थी, सिर्फ सीट मिलती थी। यहां के बस स्टैंड से, वहां के बस स्टैंड पर उतार देती थी। घर से जनवासे तक पहुंचाने की सुविधा नहीं थी। समय भी तय ही रहता था, फिर बराती नहीं भी आ पाए तो भी बस चल देती थी। बस खराब होने का रिवाज-सा था कि सरकारी जो थी। इसे 'एंड' होना कहते थे उन दिनों। कोई ना तो बुरा मानता था और ना ही चक्काजाम होता था। गाड़ी-घोड़े हैं, एंड तो होते ही हैं, यह आम अफवाह थी।

हां, यह कोशिश जरूर होती थी कि यदि बस खराब हो गई तो रापनि की दूसरी बस में यात्रियों को एडजस्ट कर लिया जाता था। बारात साथ निकलती थी और किस्तों में जनवासे पहुंचती थी। कुछ तो बारात के विदा हो जाने तक नहीं पहुंच पाते थे और आधे रास्ते से ही वापस लौट आते थे। इसे भी नियति मान लिया जाता था कि लच्छू की शादी में शामिल होना नहीं लिखा होगा किस्मत में। वैसे कुछ ऐसे भी होते थे, जिन्हें रापनि की बस से ज्यादा भरोसेमंद बैलगाड़ी लगती थी कि देर-अबेर पहुंचा तो देगी ही, इसलिए समय का मार्जिन रख कर निकलते थे और समय से पहले पहुंच जाते थे, फिर बारात को अपनी जेब से ही क्यों ना खिलाना पड़े।

ऐसी ही एक बारात... रापनि की बस से निकली। शाम के समय विदा हुई और आधी रात से पहले छोटे से कस्बे में जाकर 'टें' बोल गई यानी 'एंड' हो गई! ड्राइवर-कंडक्टर ने हाथ ही ऊंचे नहीं किए, टांगें भी ऊंची कर बस में ही सो गए कि अब जो भी होगा, कल सुबह ही, जब तक शहर से कोई सुधारने नहीं आता। दूल्हा सहित बाराती अब सड़क पर थे, जाएं तो कहां जाएं वाली हालत! सबसे बड़ी समस्या तो यही थी कि पूरी बारात को अब ठहराया कहां जाए! सारी रात तो बस में बैठ नहीं सकते। कुछ लोग तलाश में निकले तो पता चला, होटल तो क्या, यहां धर्मशाला तक नहीं है। इतनी कम आबादी के गांव में कोई क्यों पूंजी निवेश करने लगा!

तभी किसी उत्साही खोजी ने बताया कि यहां लोकल डॉक्टर का नर्सिंग होम जैसा कुछ है। डॉक्टर तो शहर में है, कम्पाउंडर-कम-व्यवस्थापक ने यह विकल्प दिया कि बारात को नर्सिंग होम में ठहराया जा सकता है। चार-पांच बैड हैं और बाकी का वरांडे में सोने का इंतजाम हो जाएगा। सुबह दिशा-मैदान का भी इंतजाम रहेगा। सर्दी का मौसम था, डॉक्टर साहब का टेंट का भी काम है तो रजाई-गादियों की कमी नहीं है। अस्पताल में भर्ती मरीजों से जो चार्ज लिया जाता है, उसमें भी बीस फीसद की रियायत मिल जाएगी कि अभी कोई मरीज भर्ती नहीं है। इस तरह बारात को नर्सिंग होम में जगह मिली थी। बाद में पता चला, वहां मरीज कम, ऐसे ही जरूरतमंद ज्यादा नजर आने लगे थे। कहते तो यह भी हैं कि रात को चलने वाली रापनि बस में ड्राइवर और कंडक्टर का कमीशन तय था कि बस कहीं और खराब नहीं होती थी।

इंदौर में यह चलन आम है कि जहां होटल थी, अब अस्पताल है या जहां अस्पताल थे, अब होटल है। कहीं यह आइडिया उसी दौर के, उसी के गांव के नर्सिंग होम का तो नहीं है। आज इंदौर में जहां देखिए, या तोअस्पताल हैं या फिर होटल तो होगा ही!

कहते हैं ना, जरूरत ही खोज की अम्मा है, तो रापनि की बस तो कभी की बंद हो गई (मोहन यादव के कहने के बावजूद शुरू नहीं हो पाई है अब तक), लेकिन नर्सिंग होम आज भी यात्रियों के भरोसे धड़ल्ले से चल रहा है। रापनि की बस तो फिर भी दशकों तक दौड़ती रही, लेकिन इंदौर में मेट्रो ट्रेन तो अभी सलीके से शुरू भी नहीं हुई है कि उसके मल्टी-परपज उपयोग के बारे में सरकारी चिंतकों ने विचार कर लिया है कि यात्री ना मिलें तो क्या, बाराती तो हैं ना! मेट्रो का इस कदर उपयोग तो उस वैज्ञानिक ने भी नहीं सोचा होगा, जिसने इसकी खोज की है। यात्रियों के दम पर भले ही मेट्रो फ्लॉप हो जाए, लेकिन बारातियों के योगदान से ताजिंदगी चलती रहेगी, हमें उम्मीद रखना चाहिए। इस देश में सब बंद हो सकता है, बस, शादियां कभी नहीं रुकेंगी और शादी है तो मेट्रो की बर्बादी कोई खां नहीं कर सकता। दिल्ली को छोड़ सभी शहरों में मेट्रो नाकाम है, हो सकता है हमारे प्रयोग से बाकी शहर की मेट्रो वालों को भी समझ आ जाएं और वे भी मेट्रो में शादी- उत्सव के दरवाजे खोल दें। हां, आइडिए की रायल्टी तो हमारे खाते में ही जमा होनी चाहिए। इस आइडिए को रजिस्टर्ड करने की पहल हो जानी चाहिए, विदेश भी तो नकल कर सकते हैं।

जेठ मास की गर्मी में पेड़ की छांव का सुख

ऋतुराज बुड़ावनवाला

जहां न पहुंचे रवि ... वहां पहुंचे एटनबरो!

दृष्टिकोण

❑ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

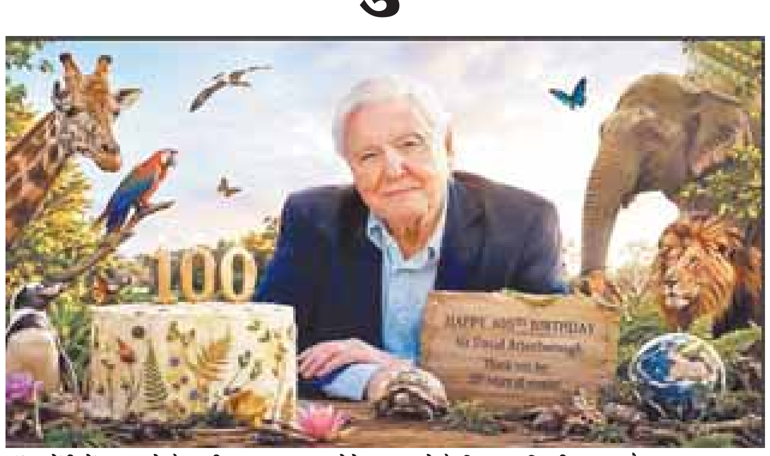

सात दशक से भी ज्यादा समय से 'नेचुरल हिस्ट्री प्रोग्रामिंग' का चेहरा रहे हैं सर डेविड एटनबरो, जिन्होंने मॉडर्न ब्रॉडकास्टिंग के लिए अनगिनत सीमा तोड़ी हैं। एटनबरो आठ मई को सौ बरस के हो गए हैं, पहली बार 1950 में वाइल्ड लाइफ शो 'जू क्वेस्ट' के होस्ट थे, जिसने दुनिया का मशहूर टेलीविजन प्रोड्यूसर बना दिया। उनके टिके रहने की ताकत ने उन्हें समय बीतने, ग्लोबल वार्मिंग और जानवरों पर इसके खतरनाक असर को दिखाने में मदद की है। एटनबरो ने कैमरे के सामने और पर्दे के पीछे टीवी के खुद के विकास को दिखाया है। बीबीसी के डायरेक्टर-जनरल बनने के दावेदार होने के बावजूद एटनबरो ने 1975 में मैनेजमेंट छोड़कर प्रोड्यूसर और प्रेजेंटर के तौर पर वापसी की। जिनके साथ काम किया था, उनसे नए आइडिया लिए। सालभर बाद 'लाइफ़ ऑन अर्थ' का प्रोडक्शन शुरू हुआ। यह बीबीसी की मशहूर वाइल्ड लाइफ ब्लॉक बस्टर है। दुनिया भर में तीन साल चालीस देशों की यात्रा की, दस लाख मील का सफर किया और छह सौ से ज्यादा जानवरों को फिल्माया। रवांडा के पहाड़ी गोरिल्ला से दोस्ती की और उससे खेलने को 'मेरी जिंदगी के सबसे यादगार अनुभवों में से एक' बताया।

बीबीसी ने द ब्लू प्लैनेट (2001) डॉक्यूमेंट्री में एटनबरो के स्क्रीन पर ज्यादा न होने पर चिंता जताई थी, लेकिन यह उनकी बड़ी कामयाबी थी। फिल्म डायरेक्टर फोदरगिल ने कहा- 'उनकी आवाज दमदार थी और कई बार मुझे करियर बढ़ाने के लिए धन्यवाद दिया है, क्योंकि जैसे-जैसे बड़े होते गए, यात्रा मुश्किल होता गई, पर उनकी बैकग्राउंड रिकॉर्डिंग जारी रही और पहले से कहीं बेहतर है। मुझे चिढ़ाते हैं कि मैंने उन्हें तीन बार लगभग मार ही डाला था।'

डॉक्यूमेंट्री फिल्म के डायरेक्टर जो लोनक्रेन ने कहा- 'वह 99 बरस के हैं, लेकिन मैं कहूंगा कि अभी भी काम करने वाले सबसे आसान टीवी प्रेजेंटर हैं। बहुत प्रोफेशनल हैं। काम जल्दी कर लेते हैं।' कैमरे के सामने एटनबरो ने कहा- 'जब मैं पहली बार यहां आया था, तब किसी ने कहा होता कि एक दिन लंदन में जंगली बीवर देखूंगा तो मुझे लगता कि पागल हैं, लेकिन वहां हैं, मेरे ठीक पीछे, काम में लगे हुए हैं।' एटनबरो चाहते थे कि डॉक्यूमेंट्री बताए कि शहरों को खुश और सेहतमंद रहने के लिए प्रकृति की जरूरत है।

सौंवे जन्मदिन से एक दिन पहले सर डेविड एटनबरो ने मैसेज दिया है- 'मैंने सोचा था कि जन्मदिन चुपचाप मनाऊंगा, लेकिन ऐसा लगता है कि कई के कुछ और ही विचार हैं। हर उम्र के अनगिनत लोगों और परिवारों से जन्मदिन की बधाई पाकर शुक्रगुजार हूं। सभी को अलग-अलग जवाब नहीं दे सकता, लेकिन अच्छे मैसेज के लिए दिल से धन्यवाद!'

हममें से ज्यादातर उन जगहों पर कभी नहीं जा पाएंगे, जहां सर डेविड गए हैं, लेकिन हम प्रकृति का मजा ले सकते हैं, हर सुबह खिड़की के बाहर चहचहाते पंछियों से बगीचे में पीछे- पीछे आने वाले रॉबिन तक और बसंत में वापसी तक। हां, प्रकृति को हमारी मदद की ज़रूरत है। यह कमजोर हो रही है, लेकिन सर डेविड हमें याद दिलाते हैं कि इसे कभी भी हल्के में नहीं लेना चाहिए या उस असली हैरानी की भावना को भूलने नहीं देना चाहिए।

अंधा कानूनः ये कैसी जमानत स्त्री की अस्मिता दांव पर

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

एक समाचार बताता है बेटी का शोषण करने वाला 'अपराधी' जमानत पर छूट कर, उसके घर जाता है और केस वापस लेने की धमकी ना मानने पर लड़की की हत्या कर देता है। हम आम जनता के पास ढेरों सवाल है (1) क्यों कानून ऐसे ख़तरनाक अपराधियों को जमानत देने पर मजबूर हो जाता है जो पीडित के लिये खतरा है (2) जमानत का कानून क्या कहता है (3) क्या खतरनाक अपराधियों के लिये अलग से प्रावधान नहीं हैं (4) क्या यौन शौषण के लिये विशेष कानून बनाये गये हैं (5) इस प्रकार के कानून कौन बनाता है (6) इसमें पुलिस, सरकार की क्या भूमिका है (7) क्या ऐसे ख़तरनाक अपराधियों की जमानत के बाद निगरानी का कोई प्रावधान नहीं है (8) क्या यौन अपराधों में आरोपियों की जमानत पर निर्णय लेते समय, मनोवैज्ञानिक खतरे, प्रतिशोध की संभावना और पीडित परिवार की सुरक्षा को गंभीरता से परखा जाता है।

वरिष्ठ न्यायविद दिनेश नायक बताते हैं कि यौन शोषण की पीडित बच्चियों के लिये जो 18 वर्ष से कम उम्र की है पोस्को (प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रन फ्रॉम सेक्सुअल ऑफेंसेस एक्ट) के अंतर्गत आता है। इसमें जमानत आसानी से नहीं दी जाती। अदालत ये देखती है कि आरोपी बाहर आकर पीड़िता या उसके परिवार को धमका सकता है या नहीं। यदि आरोपी प्रभावशाली हो, या साक्ष्यों से छेड़ छाड़ की आशंका हो तो जमानत रोकी जा सकती है।

यदि पीड़िता वयस्क महिला है तो मामले प्रायः आईपीसी की धाराओं के अंतर्गत चलते हैं। (1) धारा 376 (बलात्कार), (2) धारा 354 (छेड़छाड़), (3) धारा 506 (धमकी)।

अंतिम निर्णय से पहले किसी को पूर्ण अपराधी घोषित नहीं किया जाता लेकिन गंभर यौन अपराधों में जमानत देना न्यायालय के विवेक पर निर्भर करता है। कानून तो कहता है अदालत जमानत देते समय निम्न पहलू पर गौर करती है-

(1) पीड़िता की सुरक्षा
(2) आरोपी द्वारा प्रतिशोध लेने की संभावना
(3) गवाहों को प्रभावित करने का खतरा
(4) आरोपी का आपराधिक इतिहास
(5) समाज पर संभावित प्रभाव।

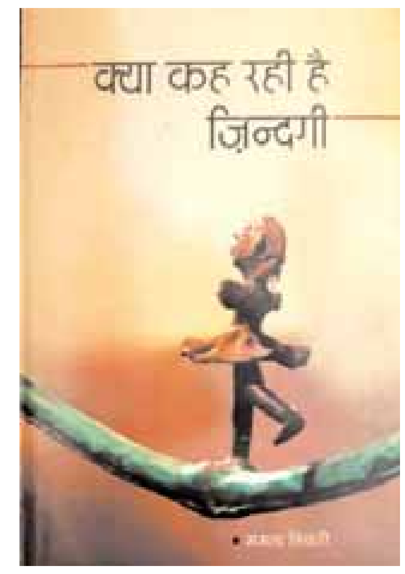

व्यवहार में समस्या यह है कि भारत में मनोवैज्ञानिक जोखिम मूल्यांकन की व्यवस्था अभी उतनी विकसित और संस्थागत नहीं है जितनी कई विकसित देशों में है। निगरानी के लिये कानून कहता है-

(1) आरोपी पीड़िता से संपर्क नहीं कर सकता
(2) क्षेत्र छोड़ने पर रोक
(3) नियमित पुलिस स्टेशन में हाजिरी
(4) पासपोर्ट जमा करना
(5) गवाहों को प्रभावित न करने की शर्त
(6) जमानत की शर्त तोड़ने पर जमानत रद्द

लेकिन सवाल तो यह है कि क्या ऐसा हो पा रहा है भारत में अभी ये व्यवस्थायें लागू नहीं है जो विदेशों में है, जैसे-

(1) इलेक्ट्रॉनिक निगरानी
(2) उच्च जोखिम वाले यौन अपराधियों की सतत् ट्रेनिंग
(3) विशेष मनोवैज्ञानिक पर्यवेक्षण

भारत में अब विक्टिम प्रोटेक्शन और विटनेस प्रोटेक्शन पर चर्चा गंभीर हुई है पर अभी भी लागू होने में वक्त है।

ऐसे मामलों में सबसे अधिक पीडा इस बात से होती है कि पीड़िता जो पहले ही भय और आघात से गुज़र रही थी, उसे वह सुरक्षा नहीं मिल सकी जिसकी समाज और कानून दोनों की थी। जमानत का सिद्धांत मानवाधिकारों की रक्षा के लिये बनाया गया है, लेकिन जब किसी व्यक्ति का अपराध गंभीर हो, और उससे पीडित या समाज को खतरा हो जब न्यायालय और जांच एजेंसियों को अत्यधिक सतर्कता बरतनी चाहिये। कानून का उद्देश्य केवल आरोपी के अधिकारों की रक्षा करना नहीं बल्कि पीडित की सुरक्षा और समाज के कानून पर विश्वास को बनाये रखना भी है।

यह घटना हमें सोचने पर मजबूर करती है कि हमारी न्याय प्रक्रिया में पीड़ितों की सुरक्षा को उपेक्षित किया जा रहा है। तो एक साहित्यकार होने के नाते मैं ये कहूं कि हमारे कानून में 'मानवीय संवेदनशीलता की कमी है।' आज तो उदास होकर यही कह रही है ज़िंदगी-

एक तरफ बरसों पुराना खून का कर्ज़ है
वहीं दूसरी और एक मज़लूम औरत का
रिसता दर्द है...
वो औरत,
मेरी मां हो सकती है या पड़ोसन
यों कोई दूसरे वतन की अजनबी
पर खून के रिश्ते से बड़ा
ये दर्द है मेरे लिए
क्योंकि
हर पल कुछ रिसता है इस रिश्ते के लिए
सारी ज़िंदगी कालीन बनी रही ये औरत
आज भी जिम्मेदारियों के बोझ से
ज़्यादा कुछ नहीं तुम्हारे लिए
पर भूल रहे हो तुम भी
इसी कालीन पर धर दिये जाओगे
किसी दिन उपेक्षित पोटली की तरह
तब के लिए रिसता रहेगा ये दर्द।